

आशा बालकृष्ण

709

ASHA ARCHIVES

मिथ्या द्विपालो मुतीभाखो
खालो हायजीपासावय
फली हाशा सुतलाकम
लीतसी खाशिम

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

मोक्ष

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

मोक्ष गीतसंगीत के सातवां प्राणमुद्र

श्रीगुरुशायनम ॥ ॥ कालीका कालनासाय दुख
नाशाय मातिका भवानी भयनाय शत्रुनाशाय
यच्चरिडका ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥

माघे च माधवे देवः फागुणा विष्णु देवता च न
वं संतनामानिः माधवे मधुसूदनैः जेष्ठश्रीधरा
देवः आषाडे वामनस्तथा । श्रावणे नारायण
देवः कृषिकेशव भाद्रके आसुने केशव दे
वाः कार्तिके दामोदर तथा । मार्गचे मधुना
मः पोषे च रुक्मवे नमो ॥ इतीद्वादशनारायण
स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

श्रीगुरुशायनम ॥ ॥ यमोवाच ॥ ॥ दुर्तो
तिभूतलोकैर्वेष्टवानां परित्यजत् ॥ अवेष्टवानां
च गृह्णीतं च्युत्या योश्च प्रयं नर ॥ १ ॥ दुर्त उवा
च ॥ ॥ किं रूपं वेष्टवानां च अवेष्टवानां कथं पु
न ॥ तदुक्तं श्रोतुमिच्छामि तन्मे ब्रूहि च मे पुन
॥ २ ॥ यम उवाच ॥ ॥ पतिवृत्ता गृह्ययस्य सत्य
वादि जितानर ॥ अतिथिपूज्यं ते नित्यं दृष्ट्वा

चक्षुःनमिलयेत् ॥३॥ कपिलापातयधेनुं गोम
 ये गृह्णते ययेत् ॥ लिखितं देव रूपेण दृष्ट्वा चक्षु
 नमिलयेत् ॥४॥ हारको गगंड किश्च सिलाया अ
 चने सदा ॥ स्फोक्ते कृतत जाप्य दृष्ट्वा चक्षुःनमि
 लयेत् ॥५॥ गोपिचंदन लिप्रांग लिप्रांग हरिचं
 दनम् ॥ चस्मादुकेन लिप्रांग दृष्ट्वा चक्षुःनमिलये
 त् ॥६॥ गितवादे हरि रंग तुलसिमातृभूषनम् ॥ श
 यचक्र मदाभेय दृष्ट्वा चक्षुःनमिलयेत् ॥७॥ अग्नि
 होत्र गृह्यस्येष्ट दद्यात्तत्परं ॥ त्रिकालं कुर्या
 त्संध्या दृष्ट्वा चक्षुःनमिलयेत् ॥८॥ तुलसि मस्त
 कं ध्यायेत् नृपत्कृष्ण चतुर्नारम् ॥ गोविन्द ध्यायेत्
 नित्यं दृष्ट्वा चक्षुःनमिलयेत् ॥९॥ सवर्गजमनुस्म
 र्य गितागज्येंद्र मोक्षनम् ॥ पठते सहस्रं नामानि
 दृष्ट्वा चक्षुःनमिलयेत् ॥१०॥ यत्र स्थाने सुवास्ताय
 तुलसिवनभूषितम् ॥ धाम्नी छाया समाश्रित्य दृ
 ष्ट्वा चक्षुःनमिलयेत् ॥११॥ विविधानुलसिसेवा ये
 कुर्वन्ति दिने दिने ॥ कल्यकोटि सहस्रानि तेव सं
 ति हरिपुरे ॥१२॥ तुलसि मृतनामानि सदा त्र्यं
 केशवं प्रीये ॥ केशवार्थे विचीन्त्रो मिवादा भव
 शा भवे ॥१३॥ धात्रि फल सदा हारं धात्रि फल

सदाजय ॥ धात्रि फलविति प्राग तेन नागयनम्
तम् ॥ १४ ॥ विह्वय पत्र स्थितो वृक्षा विह्वय मूले स
दा शिवम् ॥ विल्व शायी स्थितो विष्णु कटके शयने
वता ॥ १५ ॥ श्री फले सर्वकामार्थं जन्मस्य परमं सु-
खं ॥ पवित्र मथ पूजाया यावह र्यारि द्वादश ॥ १६ ॥
रुद्रक्ष श्रवणो वंशो कंठपी मस्तके करे ॥ केशवो वा-
त्रिवाध्यायेत् दृष्ट्वा चक्षुर्न मितयेत् ॥ १७ ॥ रुद्राक्ष
कंठ मध्यं च मानवा ध्यायेत् सदा ॥ सोऽपि रुद्र पु-
रिश्चैव गच्छते नात्र संसयः ॥ १८ ॥ रुद्राक्ष शिरको-
टि च कर्णस्थ दशकोटिकं ॥ स न कोटिवातवंश
सह श्रं वाहु जंघयो ॥ १९ ॥ शिखामेक शिवसाक्षा-
त् वल्लभ हन्ता व्यपाहति ॥ एवं ध्यायेत् शरिरस्य पमो-
क्ष मधिगच्छति ॥ २० ॥ दूत उवाच ॥ ॥ अतः परं प्र-
वक्ष्यामि यमराजस्य विस्तरम् ॥ अवेष्टु वा अना-
चासि शीघ्रमेकथं प्रभो ॥ २१ ॥ यमो उवाच ॥ ॥
पापिस्तोऽश्वनुभो दूतो विख्यातो पापकर्मणि ॥ अ-
दंती आत्मघाती च आनय नरकारयेत् ॥ २२ ॥
गो हन्ता वृक्ष हन्ता च स्त्री हन्ता बालघातकं ॥ नि-
दं जीव हन्ता च आनये नरं कारयेत् ॥ २३ ॥ सुर-
विक्रियामदो हि विय विक्रि नर्त्तनं कृतं ॥ अंगम्य

गमनं चैव आनये नरकालयेत् ॥ २४ ॥ वाह्यगोक्ष
 त्रियो वै स्य सुदुश्चैव चतुर्थकम् ॥ अमंत्रवादिच
 आनये नरकालयेत् ॥ २५ ॥ अस्वस्थक्षदनं धात्रिन्वा
 गोक्ष सहकं रसि ॥ नीलचं पूष्यगंधाच आनये न
 रकालयेत् ॥ २६ ॥ कन्यागो हय विक्रीच विषविक्रि
 तथानर ॥ मानुषा विनियंतोच आनये नरकालये
 त् ॥ २७ ॥ परदुष्यं परस्त्रीणां दं दता गुरुतल्पकं ॥
 गुरुद्वारं भि गमनं आनये नरकालयेत् ॥ २८ ॥ अ
 मान्यं वेद शोखाणि अमान्ये देवतिथयो ॥ अमान्य
 वस्त्रनगावा आनये नरकालयेत् ॥ २९ ॥ मातापिता
 परीक्षागी भर्ता स्व स्वजनाजनं ॥ भार्या जित स्वयंपो
 सि आनये नरकालयेत् ॥ ३० ॥ प्रभवंति वै हवनां
 विवादं कथ्यते सदा ॥ सदानि च्य पकृवीति आनये न
 रकालयेत् ॥ ३१ ॥ दूतौ उवाच ॥ ॥ अस्माकं वल वरु
 स्य जज्ञा हर विनंदनं ॥ गृहवा सिद्धकोरेषु तत्रस्था
 नेषु आश्रमं ॥ ३२ ॥ यम उवाच ॥ ॥ मुक्तकसि यथा
 नारी विवाद कतह प्रियम् ॥ मस्तकं मम तल्लु च्चात
 त्र विशा मद्रूतयो ॥ ३३ ॥ अगम्य गम्यतायेन गुरुवि
 पुत्रीयेवर्ध ॥ सयत्रै विक्रीतायेन तत्र विशा मद्रू
 तयो ॥ ३४ ॥ भग्नभाराड भोजनं च मंदिरं मागना
 म्बिना ॥ अहमिलै रजयगडै तत्र विशा मद्रूतयो

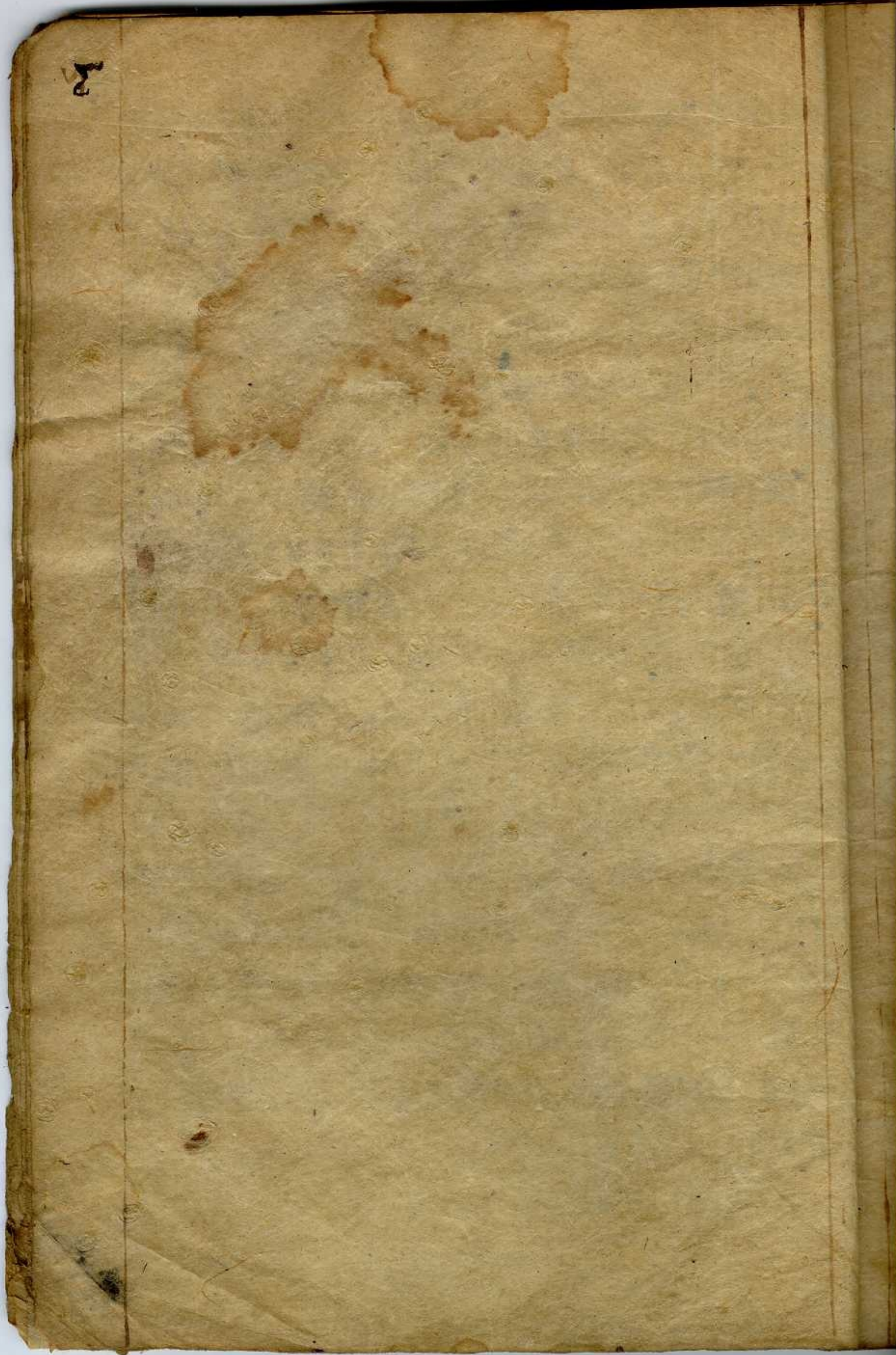
॥३५॥ नितकुण्ड मडभाण्ड गोचर्मो घुचकारये
 त् ॥ भजनकूपेषु वास्तव्यं तत्र विश्रामदुतयो ॥३६॥
 उन्नमाने सुखदक्षेषु चाचले चैव संकटे ॥ महिषि
 खर उद्धुच तत्र विश्रामदुतयो ॥३७॥ यत्र स्थानेषु
 उद्धुस्वस्वानमोजारकुर्कुट ॥ ग्रामसुकरनीलाक
 तत्र विश्रामदुतयो ॥३८॥ सर्ववार्ताश्रुतोर्तनु सदुतो
 हर्षप्ररित ॥ विश्रामचतदा लोके कीडस्तत्र महित
 रे ॥३९॥ स्तनानि यमगीतानि अत्यमृत्युविनासिनी
 ॥ संध्याकाले स्मरेयेत् नित्यं धर्मसमुक्तवान् ॥४०॥
 पठित्वाश्च नुयाश्चैव संध्याकाले मिदं लयेत् ॥ यम
 दुत नगच्छति स्वप्नतिरेन दुस्यते ॥४१॥ अपुत्रो लभ
 ते पुत्रो निर्धनो धनलभ्यते ॥ व्याधितो मुच्यते रो
 गी विशाश्च लभते फलं मु ॥४२॥ साकिनी पुत्रभू
 तस्य भयं नास्ति कदाचन ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो वि
 स्तुलोकं सगच्छति ॥४३॥ पठिते यमगीतायां सर्व
 कामफलपदा ॥ ब्रह्मलोके भयं नास्ति भवरोके स
 गच्छति ॥४४॥ ॥ इति श्री यमगीता श्लोक संपूर्ण
 म् ॥ *॥ इति संवत् १८८९ साल जेष्ठ वदि ३ रोज*
३ तदीने दुर्गानरसिंहीतीतम् फेर इति संवत् १८९
७३ साल जेष्ठ वदि १ गते दूरो ज ५ तदीने गणेश व
हाडुर प्रधान कस्ये पहिया ग्रामे लीखीतम् ॥ शुभ

स्वस्ति श्री गुरु गणेशाय नमो ॥ ॥ अथ भुमिकं प
 विचार लिखित ॥ ॥ वायिमन्दल वायिवकूनस
 दिसा ॥ ॥ अश्लेषा २ पूर्वाषाढ २० सतभिषा
 २४ रेवति २७ आरद्रा ६ उत्तरा २६ मूल १२ धु
 लीनक्षत्रस भुवा वोलसा ॥ सुभिक्षे जुपीव वागा
 ईव लंघवाधलपिव स्वानहो ईव भिनिव सजायी
 जीं आरोगे जु ईव प्रजा मुख जु ईव पुत्रवाधलपि
 व अकालमृत्युनसियमफु देववाधलपीव वसु
 वस्त्रवाधलपीव आदिन नानावस्त्रतिलाहिलावा
 धलपीव ॥ १॥ वायिमन्त्रल वायुवे कोनस ॥ ॥ चि
 त्रा १४ मृगशिरा ५ स्वाति १५ उत्तरा फाल्गुनी १२ पु
 नर्वसु ७ असुनी १ हस्ता १३ धुलीनक्षत्रस भुवा
 वोलसा तवधाड राजाया क्षत्रभंग छायादको वक्ष
 सियुव कूलदको हानि जु ईव भुतपिसाचराक्षस
 वाधलपिव आदिन अतिभयेकतह जु ईव धूँवा
 धलपीव आदिन वसलपीव देसकटकया धन
 नासवेतस वामगाईव मिया भय दईव हानि जु
 ईव सिसाफलहानि सिकदबू वथानक्षत्र जु ई
 व सामेस चोले फई पंक्षी दको सां अस्त्रिदको
 यां गर्भदको याव चोतसा मवुईव प्रिथ्वी उपद्र

जुईव मभीड जुईव दुर्भिक्ष जुईव मभिड वाधल
 पिव ॥ २ ॥ महिंड मंडलेलोहं वाचकं भुरवावोलसा
 ॥ ॥ धनेसा २३ रोहिनी ४ जेखाचि भवन २२ अदु
 राध १७ अभिजीत २१ शुलीन क्षत्रस भुरवावोलसा
 काननं वागाई सय भिनिव रानाया भिनीव पुजा
 या सुधि जुयीव धनवाधल पिव सिक मदईव सम
 सया भिड जुईव ग्रहनदईव केतुग्रहन उदय जु
 ईव निष्ठात जुईव ॥ ३ ॥ आगनय मंदलकूनस्व
 या भुरवावोलसा ॥ ॥ किर्तिका ३ विसाखा १६ पू
 र्वभई २५ मघा १० तिस्य ८ भरुनि २ पूर्वफाल्गुनी
 ११ शुलीन क्षत्रस भुरवावोलसा ॥ ॥ सांमे सया
 इइका जुईव स्वान सिसा फल फो जुईव मिरवा
 स्याक दईव अतिसार लोय दयीव मिघा भयदईव
 चिकुलोय दईव दुषि जुईव उतपात जुईव अशिद
 कोया गर्भ मदईव धासा कोसा वल साईव राजाया
 पीथीं विग्रह जुयीव पुजाया संताप जुईव वामगा
 ईव १ दयाचो कालंय सुईव ससकन लोयीव अ
 सत्तेवादि जुईव ॥ ४ ॥ इति भूमिकंपविचारयाय
 यु फल सोयाव धाया गुजुल शुभम् ॥ ॥ इती सं
 म्मत १९२३ साल जेखवदि १ गते द्दरा ज पत दिने ग
 रोशवहा ५२ प्रधानक संपदीया गामे लीवीतम् ॥
 ॥ शुभम् ॥

ॐ नमः धर्मराजाय नमो ॥ ॥ धर्मराजनं आग्याद
 नं ॥ हे जमदुतपत्नी पृथ्वीवड्गव विष्णुभक्तिजुक्ता
 लताव भक्तिमजुवपत्नी अनाचारीपतिरुयावनरकसं
 तरयहयमाला ॥ १ ॥ ध्वतेनेड्गव यमदुतनंधालं हे धर्मरा
 ज विष्णुभक्तीगथी ड्गमसिया भक्तिमजुवगथी ड्गध्वस
 कड्गव पसन्नजुयमाल ध्वतेदुतयाभाषा नेड्गव धर्म
 राजनं आजादतं प्रतिवृतादवगुहे स सत्यवाडीपतिअ
 तिन भोजन दानयाकपनि मिखान स्वयेमत्ये ॥ २ ॥ क
 पितसो लहिकपनि सो सधीनवाथीलाव नित्यकर्मया
 कपनि मिखाने सोयमत्ये ॥ ३ ॥ दारिकासमोलहुव गी
 धकी समोलहुवपनि सालीगामपुजायाकपनि छेव
 मुर्तिचोयाव चोड्गपत्नी मिखान स्वयमत्ये ॥ ४ ॥ मेहा
 लपनि विंथाकपनि तुलसिमालाकोयाकपनि स्वस
 चक्रचिह्नद्वपनि मिखान स्वयमत्ये ॥ ५ ॥ अग्निहो
 त्रयाकपनि सास्त्रपोलपावचोड्गपनि स्वपोलसंध्या
 याकपनि मिखाने सोयमत्ये ॥ ६ ॥ स्तवराजजपपोल
 पावपनि गणेशमुर्तिपुजायाकपनि सहश्रनामपोल
 पावचोड्गपनि मिसान सोयमते ॥ ७ ॥ रुद्राहमाताहू
 सपोलस श्रुयावचोड्गपनि गलपोलसकोयायाचो
 ड्गपनि ससंधाड्गवपनि विष्णु २ धकं ह्ययावचोड्ग
 पनि मिसाने सोयमते ॥ ८ ॥ ध्वतेदुतनेनेड्गव ईना
 पयातं हे धर्मराज अवैहव अनाचारीपत्नी गथी ड्ग

मथानेकं हय यत्न थ्वतेने ऽणव धर्म राजने धालं हे दूत
पनि ॥९॥ पापी पनी काने हनेने ऽण मे चोल जुव पनि थ
व आत्मा घात या ऽणव दुख विव हं नरक सं तय मात
॥१०॥ गो हथ्या लाक पनि वं हथ्या लाक पनि र्खी ह
थ्या लाक पनि चौर हथ्या लाक पनि दोय म दय कं मे व मो
च क व पनि नरक सं तय हय मात ॥११॥ ग्राम दोही प
नी मत्थ व हं सुग पान या क पनि प सुव को दा या क प
नि नरक सं तय हय मात ॥१२॥ ववु तोल ता व त न ही
कल महि स्थं चो ऽण पनी भी ऽण जन व भाव म दु प नि का
य ह्यो च तोल ता व चो ऽण पनि नरक सं तय हय मात ॥१३॥
॥ थ व धर्म दान सक पत सु व हं हरि वा तू स न व हं प व
का त स रि त्रि भोग या क हं नरक सं तय हय मात ॥१४॥
वेद शास्त्र निंदा या क हं देव तिर्थ निंदा या क हं ब्रा ह्म
ण निंदा या क हं नरक सं तय हय मात ॥१५॥ थ्व ते
ने ऽण व य म दु त ने पु न र्वा द ने ने ज्ये प नि व क्ष मा व र वि
य मात जे प नी स य ता वा स ग ना हे ध र्म रा जा का ड न्ये
थ्व ते ने ऽण व ध र्म रा जा न आ ज्ञा द ने ॥१६॥ ने ऽण दू त ध
कं काने सां फा हान त या व चो ऽण मि सा जन द व धा स
त्वा य थ व स्वान न ह्य म हा व था म थ थि था स वा स
या व ॥१७॥



2

4

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॥ श्रीकृष्ण
 स्मया के अर्जुन स्नेहनेनेने छुया पापन कान जुलं छुया पा
 पन दरीद जुलं छुया पापन कस्य जुलं ॥ १ ॥ श्वसकने मा
 लधकं ध्वते अर्जुन यावचन नेड्वाक श्रीकृष्ण ते कने
 ॥ मेवया शिव जुया पापन कान जुलं मेवया दुव्य मो
 चकाया पापन दरीद जुलं पुर्वज अस हथाया डवाया
 पापन कस्य जुलं नेड्वा अर्जुन ॥ १ ॥ हने अर्जुन नेनेने
 छुया पुण्यनं लुधुलं छुया पुण्यनं सता किसिधुलं
 छुया पुण्यनं ग्रामधुलं श्वसकने मात ॥ श्रीकृष्ण ते
 कानं ॥ सुवरादानया डवाया पुण्यनं लुधुलं भुमिदा
 नया डवाया पुण्यनं सता कीसिधुलं अन्नदानया
 या पुण्यनं ग्रामधुलं नेड्वा अर्जुन ॥ २ ॥ अर्जुन नेनेने
 छुया पापन श्रीमृत्यु जुलं छुया पापन पुत्रमृत्यु
 जुलं छुया पापन भुमि जुलं श्वसकने मात ॥ श्री
 कृष्ण ते कने ॥ गनिमपुलाया पापन श्रीमृत्यु जु
 लं मेव भंगया डवाया पापन भुमि जुलं श्रीचास्या
 डवाया पापन पुत्रमृत्यु जुलं नेड्वा अर्जुन ॥ ३ ॥ अ
 र्जुन नेनेने छुया पुण्यनं स्यालभीनं छुया पुण्यनं
 सुपात्र जुलं छुया पुण्यनं सदा भोगी जुलं श्वसकने
 मात ॥ श्रीकृष्ण ते आजादतं ॥ चाकुदानया डवाया पुण्य
 न स्यालभीनं सा दानया डवाया पुण्यनं सुपात्र जुलं

सत्ताकिसि दानयाज्ञयापुण्यन भोगी जुलं नेऽअ
 र्जुन ॥४॥ अर्जुन नं ने नं ह्रयापापन सदो गगी जुलं ह्र
 यापापन न क स जायपलं ह्रयापावन नो पुत्र जुलं
 थ्वय कने मात ॥ श्री कृष्ण नं आग्या दतं ॥ कन्या मीया
 यापापन नर क स जायपलं ह्रयापावन दोह याज्ञ
 यापापन नो पुत्र जुलं देवनि ह्रयायाज्ञयापापनं सदो
 गगी जुलं नेऽअर्जुन ॥५॥ अर्जुन नं ने नं ह्रयापाप
 न डोय जुलं ह्रयापापनं धिचा जुलं ह्रयापापन धो
 ल जुलं थ्वय कने मात ॥ श्री कृष्ण नं आग्या दतं सते
 वलं सुरापान याज्ञयापापनं डोय जुलं त्वस्या गम
 न याज्ञयापापन धिचा जुलं असुद दान याज्ञया
 पापन धोल जुलं नेऽअर्जुन ॥६॥ अर्जुन नं ने नं ह्र
 यापुण्यन वीशा वंत जुलं ह्रयापुण्यन धना धे जुलं
 ह्रयापुण्यन राजा जुलं थ्वय कने मात ॥ श्री कृष्ण नं
 आग्या दतं ॥ पूर्व जन्म स वीशा सेडया पुण्यने वि
 शा वंत जुलं जज्ञयाज्ञयापुण्यन धना धे जुलं
 वानारसि स मिडया पुण्यन राजा जुलं नेऽअर्जु
 न ॥७॥ अर्जुन नं ने नं ह्रयापुण्यन समस्त वन
 पां प्रीती जुलं ह्रयापापनं सुर्व जुलं ह्रयापापनं मि
 सा जुलं मिमा जुलं थ्वय कने मात ॥ श्री कृष्ण नं का
 नं ॥ वन याज्ञयापुण्यन समस्त लोक प्रीती जुलं

अथकालयाज्ञयापापनं सुखं जुलं क्रोधः अज्ञा
 नयाज्ञयापापनं सुखं जुलं मिसा जुलं धुलीया
 श्रीकृष्णनं अर्जुनयताकानं ॥ ८ ॥ इतीश्रीअर्जु
 नश्रीकृष्णसंम्वादे कर्मविपातकथाहासमाप्तः
 शुभम् ॥ ॥ इतीसंम्बतु १९७३ साल मोती ज्ये
 ष्ठवदि ४ गते १० गेज २ तदीने गंगोशवहाडुर
 पवान कस्ये पहिया ग्रामे लीखीतम् ॥ ॥ ॥

राग शिव अस्तुति ॥ ॥ जय शिव ऊँकारा स्वा
 मिहर ऊँकारा वृद्धा विष्णु सदाशिव और गंगे
 गौरा ऊँहर हर हर माहादेव ॥ १ ॥ यकानन
 चतुरानन पंचानन राजे शिव पंचानन राजे
 हंसासन गरुडासन ध्वजाहन संगे ऊँहर ह
 र हर ॥ १ ॥ दोभुज चार चतुरभुज अस्तभुज
 दशभुज तुमसाहं शिव दशभुज तुमसाहं
 तिनहिरूप निरक्ता शिव संकर ध्यानमें धर्ता
 भवसागर पारतरता ऊँ हर हर हर ॥ २ ॥ अक्ष
 माता वनमाता रुद्रमाता धारे शिव रुद्रमाता
 धारे ॥ त्रिपुरारे रिपुरारे शिव कनकमला धारे
 ऊँ हर ॥ ३ ॥ स्वेताम्बर पिताम्बर व्याध्याम्बर
 अंगे ॥ सनकादिक व्यासादिक मुतादिक संगे
 ऊँ हर ॥ ४ ॥ डण्डक मण्डल चक्र त्रिशूल ध
 रता ॥ जग करता जग भरता त्रिभुवन जग मो
 हं ऊँ हर ॥ ५ ॥ शिव जिके कानमें कुराड लंग
 लमें मोती के माता शिव यों के माता ॥ जटा में ग
 गा विराजित वन्दे अद्भुताः ऊँ हर ॥ ६ ॥ व

ह्या विष्णु सदाशिव अन्तरनहिकरता शिवअं
 न्तरनहिकरता ॥ दुखहरता सुखकरता जग
 तपालनकरता ॥ ऊँ हर ३ ॥ ७ ॥ चौसठि जोगि
 नी मंगल गावे शिवान्त्यकरता मेह भैरवा ज्ये
 ॥ ताल मृदंग औरवा ज्येदं म्बरुः ऊँ हर ३ ॥ ८ ॥
 ब्रह्मा विष्णु सदाशिव भुवनके राजा शिवत्रि
 भुवनके राजा ॥ चारौ वेद उच्चारौ अनहद के वा
 जाः ऊँ हर ३ ॥ ९ ॥ सावित्री वर ब्रह्मा लक्ष्मी वर
 विष्णु गायत्री अर्द्ध गा शिव गौरी गंगा ॥ ऊँ हर ३
 ॥ १० ॥ पारवति परवत में शिवजि के लासे शि
 वहर शिवजि के लासे ॥ पृथ्वि में ब्रह्मा विराजि
 त विष्णु वैकुण्ठे ऊँ ॥ ११ ॥ कामि मे वासुनाथ वि
 रजित सिव नन्दा ब्रह्मचारी शिव दिनी ॥ भोगल
 गाई महिमा त्व अति भारी ऊँ ॥ १२ ॥ जंग नक्षत्र ल
 पित संकर श्री भूवन के स्वामि शिवहर संकर श्री भू
 वन के स्वामि ॥ सुरनर मुनी सब गावे प्रभू अनर
 ज्यामि ऊँ ॥ १३ ॥ सुवर्ण के थलिया मे कपुर कि वा
 ति शिव हर कपुर वा ति ॥ अंकुर कुंभ कुंभ ले पीत
 सोभा त्वं सुभ कारी ऊँ ॥ १४ ॥ शिवजि के आरति

निभुवनवनभेकोहि सगलगाने शिवहरमेग
लगावे ॥ भजन शिवानंदस्वामी-मनईक्षाफ
लपावे ॥ १५५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीधर्मलक्ष्मीसंवादे ॥
 यतो सत्यं ततो लक्ष्मी यतो लक्ष्मि ततो हरी यतो ह
 रिततो धर्म यतो धर्म ततो जय ॥ १ ॥ ग्वह्नयाके स
 त्पदता वल्लयाके लक्ष्मिनवा सल्लयुक्त लक्ष्मी नवा
 सया कथा स श्रीनारायण न नवा सया युक्त धर्म न दई
 व गोह्नयाके धर्म दता वल्लया सदा काले जय जुई
 व ॥ श्रीधर्म उवाच ॥ भो लक्ष्मि हतपोतयता समस्त
 लोकने हतपोतसेन विज्यात के नीमीति नवा द्याया
 कं पुजाया य धकं धधेन हतपोतसेन समस्त लोक
 उर्थे ज्ञानका वम विज्या डन हने गुलिहीया नयमदु
 हने गुलिहिन अनेक सलाकि सिधुलं दुव्यधुलं थ
 धेन हतपोतसेन उर्थे ज्ञानका वम विज्या क धवधे
 हतपोतसेन कड्याव विज्याय मात ॥ ध्वने धर्म न
 आग्यादय का घने डन व लक्ष्मिन आग्यादय कलं भो
 धर्म हतपोतसेन ने डन गुयां जिब विस्तारया डन व
 कने हतपोतसेन ने डन व विज्या डने ॥ जिचोने
 था सगना धातसा मुलं सत्यद वल्लयाके चोने ध्व
 नं लिधर्म द वल्लयाके जिचोने ध्वनेता मदुल्लयाके
 जिचोने मसु ध्वल्लयाके लक्ष्मि दयिव मसु हने कं
 जिन मिसा जने या लक्षन सोया बुचोने गोह्नस्त्रि

असुचि जुल दहया के जिन चोने मयु । असुचि
हया जुल देन गथे धालसा हि सेन आगत स
ईलाव हने को थास वापु म हाव ह । मुगा दो दो
चि डव तये यो ह । हने थव ह्या स खिति तो तो
था काव तये यो ह । हने साध पलीं या डव जुव ह
तु तिला हा खाल मसि से अंन नय यो ह निश्च
यन धाय थने अल सेन धाय जुलो थ थि ड ह
या के जि चोने मयया थ थि ड या के जि दु स्वयं म
यु पुन हने गो ह मि सा जन या सिर स्व भावने मि
ड वे हर म मि ड ह थ व थि थि या के मा ल मु मा ल
कं जुय यो ह व स त म स्व से वे व हार या क ह ति
पि ह पि या डव नि दान या डव तय म स व ह
हने सा क म सा क व क म व क ह ता स न नय यो
ह हने कं पु रु ष म न क स्य म ति य क स्य थ मं जु
को न या व स त ती या जु ई ह थ थि ड ह मि सा ज
न या ज्या न हि थं डु ह व व गु ति फु डव चो नि व
थ व म न स वां ह जु ल सा नं अ ने ग य कार नं व
मु दु हा व ल सा नं व व जु को सा नि व वा ड मु
या नि व म य ग थे धाल सा का क गु भा जन स
ल स त या र्थे सु डव वा नि व थ थि ड ह या के ।

जि-चोने मयुधकं-लक्ष्मिनधर्मया हवने आ
ग्यादयकाव विज्यातं ॥ ॥ इति श्री लक्ष्मिधर्म
सम्वादे प्रथम अध्याये ॥ १ ॥ हने धर्मनं आग्याद
यकलं भो लक्ष्मि हतपोतस्येन-अतस्तनया सं
कड्गव विज्यातं आवलक्षेतया संनेने गुईक्षाद
वनि-हतपोत विज्यायथा ये या सं प्रसन्नं जुयाव
कड्गव विज्याहुने धर्म धर्मनं आग्यादयक गुप्तेने
हुने-लक्ष्मिन आग्यादयकलं ॥ भो धर्म हतपोत
सेन विस्तारननेने हुने विज्याहुने-जिन हूपाया मु
ल जुयाचो हु गुप्तेने गोहया सत्येदता वस्यया
के जिचोने-वने लिमिसा जनया तक्षन सोये गोह्या
मिसा जनने थव पुरुषया के स्वेवाया क भक्तिया
क हिरथ मधुर वचन साक पुरुषया दुख महु गुलि
वांछायाक पुरुषया के भिङ्गुलि जुकायाक पुरु
षया वांछा जुका गुलि सं हाक पुरुषया वचनने ज्ञा
वचोङ्ग पुरुषया नसा देव साङ्गर्थे भालपाव
चोङ्ग हने हु वस्तु जुलसा पुरुषया के निष्ठा
याव लिथ थमन नवल भिङ्ग २ वस्तु जुलगाव
तिय गु जुलसा थव स्वामि हूया तिय के नय गु
जुलसा थव स्वामि हूया भोजन यात के थथेया

इन्को इन्हायाके जिचोने निश्चय नं हने पुनर्वार
पात काल सं दाने वने दुवने पिवने को। ठा पटि वा
पुइव थव ह्मास सुचिलात काव रवा ल वुयाव
मोत हुय म्वा ल ज क सिल ह्मा नित्य कर्म याय सु
चि पवित्र या इव नित्ये कर्म पुजा या इव पुजा कर्म
धुन काव माम ववु थव पुरुष सेवा याय पुरुष भो
जन यात के थते हि थ धुन काव तु नि थ म नं अन्न
नय थथे हि थ या क ह्मा के थु का जि चो ने निश्चय
न हने थ ह्मा ते मन जुय मु माल थ या ह्मा अने क
धन सम्पति दय काव विय अने करान फल मुन
लु व ह दयी व गु गु लि वा न्हा यात व गु ली दय का
व विय कय गु मू मा स जा कि वा कु थ २ प्र मा रा धे
दय काव विय जु लो गो ह्मा या स ते द ता व ह्मा या क्षे
स जिन वा स याय निश्चय न धकं लक्ष्मिन धर्म या
ह्मा ने आ जा यु या व वि ज्ञा तं ॥ ॥ इ ति श्री धर्म ल
क्ष्मि सं म्वा दे स्त्रि नो ल क्षे ना क था हा दु ति य ध्या य
२ ॥ ॥ हने लक्ष्मिन धर्म सके आ जा दय काव
वि ज्ञा तं भो धर्म ह्मा पो ल य ता मि सा जन या ल
क्ष न यं क ने धुन ह्मा पो ल स के पु रा य या धे ने ने
ह्मा पो ल न कृ पा त या का इव पु सं रा जु य मा ल ध

कं. लक्ष्मिन. धर्म या हवने. विनति यातं. ध्वने
लक्ष्मिया आ ग्याने ड्ण व. धर्मन. आ जा दय कले
भो लक्ष्मि. छल पो ल सेन. पाप पुण्य या खं ने ने
ईक्षा जुल ना व. जिन क ने छल पो ल सेन. विस्तार
र या ड्ण व ने ड्ण व विज्या हु ने. मिसा जन ने. थ
व पुरुष अति न महिक. हि थं २ त मन जु व
ह. हि थं वो ल व च न ज क वि व ह. हु ने पुरुष
या त सुई खाल म के ड्ण. पुरुष या व च न म ने
ड्ण. हा हा वां ले. पि हा वां ले. ला हा त स. त स्ये
न या व जु व ह. सं ध्या काल स. न ये प्र व ह. मता
म दय क स्यं चो ड्ण. परि पा हु ना म पा क ह.
लोक म य व ह. जो ड्ण व. व व प नि स या व लु
जु क का या व वि य म य व ह. थ थि ड्ण मि सा
लि थे मृत्यु जु ल ना व. पु न ज न्म स. थ ह ग थे जु
ई धा त सा. जी न काने. ने ड्ण. पुरुष महिक या
पाप ने. उई नि चा ई व. हि थं त मन जु या या पाप
न. ला क ला क ह न दाय का व जु ई व. पुरुष य
ता. वो ल व च न वि या या पाप न. नु ग ल म हि स्ये
नो न वा य म फ स्यं चो नि व. थ व पुरुष या त जो
ध न सो या या पाप न. हा मि कु टि जु ई व. मि स्वा

सिली कुति जुईव विली कुति स्याल जुयीव थ
 वपुरुषया वचन मनें सें पुरुषया के दो होया डन
 या पापन थ स्या गति मला सें अनाव सि जुई
 व नयम फईव थ वपुरुष मतिक सें थ वजु कति
 या या पापन बिचा जन्म जुया व सात वय मालि
 व हुन पुन जन्म स दरिद जुय मालि व हुन अभ
 क्षव सुन या व जुईव भोलहि गोह्या मिसा जन
 न थ थिइ अकर्म यात वह मिसा जन या लिथे
 मृत्यु जुल नाव पुन स जन्म स अथें जुयी वध कं
 धर्म न लक्ष्मि या हुवने आग्या दय कल ॥ ॥ ई
 ति श्री धर्म लक्ष्मि संम्भादे स्त्रिनां पाप पुण्य कथा
 हा तृतीय ध्याये ॥ ३ ॥ ॥ श्री लक्ष्मि उवाच ॥
 ओ धर्म हृत पोत या रूपान पाप या सें नेने धुन
 आव जिन मिसा जन या पुण्य या सें कने विलार
 नेने डन व विज्या हुने मिसा जन या धर्म कर्म दाने
 मेले म सु थ व पुरुष या के समस्त तिर्थ पुरुष या तु
 ति पालि स समस्त देवता समस्त धर्म थ व पुरुष
 या स्ये वा तिर्थ हिला गुलि पुण्य लाक थ व पुरुष
 या सरिर निदान यात के तुति सित के तुति वृत के
 हृत म व तु से निदान या डन व चीने थ व पुरुष

श्री

याहेलवलडनाव थवदेने थवपुरुष विनान सु
नेमदु थथेहिहिहिहिया सेवायाय सुथातेवलंदा
ने दाडनाव थवपुरुषया पादुकासनमस्कारया
य थुलिधुडगलि छेसवसिवापुय धुनकाव स्नान
यातकेतातलातकोवविय पुरुषनधयावडाव
तहलयाय पुरुषया तुतिचायकाव तुतियाति
न थवमियासपिय चरनोदय धकंभालपावतो
ने सिरसहाय थुलिधुनकाव नित्यकर्मपुजाया
यता मालकोसामाग्रीतातलातकावविय थुलितहत
धुनकाव भोजन ज्युनार यातके भोजनयातकेधुन
काव थवपुरुषया चिपगुथालासतयाव श्रीकृष्ण
याभोग भालपाव थमनेने थथेहिहिहिनीत्य
थवगुलीतरहन थवपुरुषयाकेवेक्याकलया ध
मनदर् ईहलोकस सुखसम्पतिलाईव थवहय
ता प्रतिवताधाय न्याडनवेतया भ्वातिनिनेस्ये
वाकाकथे मामने आदरने ज्युनारयाचकार्थे
वस्यानेभावयाकथे थमने चाहसथवपुरुषय
ताभावयाय थवनेभावसिवहमिसाजनयाना
म शक्तिपुर्वकन्या धयाहमिसाजनकाया दो
ष दोलहिता दव गुणादतंमोता धुधुधालसा
पुरुषन दुताहयावस्तु निदानयाडावतये हनकं

कुलरक्षायाय निमित्तिन कायमोचावयके कुल
धर्मरक्षायातेके हने माहापुराणमिसाजनयादव
निधुधालसापुरुषमृत्युजुलनाववसवनायांस
सर्गनसतिवडावजिवत्यागयायथथिडगुपदा
र्थपरसस्तधर्मपरलोकसकुनमदुमिसायाध
र्ममाहापुराणथथेयाकलमिसाजनयागथेजु
वधालसाथथलमिसामृत्युजुलडावसुवरा
याविवाहसथाडावस्वर्गयनिवस्वर्गसगथेत
युधालसापानयावसतनतियकावतयिवमाहा
रत्ननदिनपतिनियकावतयीवभिड०२वस्तुन
कावतयिवअनेकभोगभक्तियातकावतयीव
धकंलक्ष्मिनधर्मयताकडावविज्याते॥ ॥
इति श्रीधर्मलक्ष्मिसम्वादे स्त्रिंशोपुराणफलक
थाचतुर्थोऽध्याये॥४॥ ॥धर्मउवाच॥ हने
धर्मनलक्ष्मियताकडावविज्यातेभोलक्ष्मिछल
पोलसेनभालतायासभिड०स्वयायाफलगथे
जुइधकंनेडावविज्यातजिनकनेछलपोलसे
नयकचित्तयाडावविज्याहुनेमिसाजननेथ
वपुरुषकोहनस्वयायापापनहामिकुतिजु
लेविलिकुतिथ्यालजुलमिखाभवेकाडावतमन

स्वयाया पापन याति निजुयाव जन्म काइव पु
 रुषया वचन ते मनने डनया पापन ईहलोक स
 कानमुल जुस्येचो निव पु रुषव उति उतर नत्या
 डनया पापन आति निजुईव स्तुतु सनादस्य सि
 ईव नय सं तोने सं खान कान मखान कान थमं
 याक चो न जुक्क नयाया पापन सो हाव खिचा जु
 याव मेलेतु युयाव नय मालकाव जन्म कायीव
 मेव याके चो डन २था सदायाव तईव सो हायाव
 सिईव हने थव पु रुष क्रोधन नपाला डनया पा
 पन वाले वाले भाग्य मदुस्य जुईव लीथु हथु या
 दासि जुयाव सिईव क्षस मथासे जुय मालिव प
 र पु रुष याके जुयीव हने थव पु रुष याके कुदुम्ब
 निदान मयाक हयाके ज्या मया डनाव छाय भिन
 काव वेव हार याय माल थव पु रुष याके एक मन
 या डनाव स्यवायाय माल धकं धर्मने लक्ष्मि याके
 ओदेश दय काव विज्याते ॥ ॥ इति श्री धर्म लक्ष्मि
 संम्वादे पाप फल कथा पंचमोऽध्याये ॥ ५ ॥ ॥
 श्री धर्म उवाच ॥ हने धर्मन आग्या दय कले भोल
 क्षि हने जेन काने ने डनाव विज्या कुने स्त्रिजातिया
 धर्म कर्म भक्त याय मेले मख थव पु रुष या भ
 क्ति सेवा याय हिन सुपोल सुथाते वले मेव या

स्वात्ममत्तसे. थवपुरुषया. स्वात्मनिष्ठय. थवया
फल. यकादशिवर्तदाज्ञयाफलदवथगुलिप
रिमानने. याकातमिसा जुलसा. थवपुरुषयाके
भक्तियाज्ञगुपुण्यन. देवतायाकल्पहिदा. स्वर्ग
सवासलाईव. निश्चयन. थवनलि. थगुलि. पुण्य
न. भि० स्वात्मजुयाव. ज्यासयाव. स्त्रिगुणथुला
व. ज्ञानि. विचक्षन. हेमावेन. मनुष्यजुयाव. जन्म
कालवयिव. थत्यन. थवपुरुषविना. सुनेम
दु. ॥ श्रीधर्मउवाच. ॥ भोतस्मि. दिनने० रुने. पा
पलाकयायेकने. थवह्याचवियाहोयाथासफा
यावकायायापापन. थवस्त्रिव. वायमानिवलि
पतिस. स्त्रित्वहोयावजुयामृत्यूजुईव. थवह्या
चमोचावियाथासमफासेजिताजनप्रतिपाल
याज्ञव. अन्नवस्तुआदिनवियाव. प्रतिपालयाज्ञ
याफलन. महाधनाशुजुयीवभागेमानिजुईव.
लिथुगुजन्मस. भागेवन्त. दुबवेनजुईव. हुनेह्या.
चमोचा. मेलेविययता. तिसाने. वसतने. तिय
काव. भरियाजनने. वस्त्रकुवुयकाव. भागवर्त
नवेसुजाकुवुयकाव. वियावहोयायाफलन. थ
गुलियाकल्पयता. देवतायाकल्पहिदा. स्वर्गस
वासलाईव. पुनवीर. हुने. पितृकार्यस. जितह्या

चमोचो भिनामोचो वीनाव नकाया फलन ग
धे धालसा सा सद्धिदान या ड्वाया फलना क स्व
ग सवासलाईव पुनहनं छता काने ने ड्वा विज्या
हुने जिलया के कार्य मदयकं अन्न नलसा वस्त्र
कालसा जिमने देता ड्वाव पुले मालिव ह्या चमो
चो मेले वीया होय वेल स वगजिदाम कालसा
हि देता ड्वाव पुले मालिव थय धाक निश्चय नजु
ईव धकं धर्मन लक्ष्मियता क ड्वाव विज्यातं ॥ ॥
इति श्री धर्मलक्ष्मि सभादे पाप पुण्य कथा षष्ठ
मो ध्याये ॥ ६ ॥ ॥ धर्म उवाच ॥ भो लक्ष्मि मनु
ष्यन पुर्व जन्म सया ड्वा पापया फलन नजु ईगु सक
ने ने ड्वाव विज्या हुने सी जल वस्तु सुया या पापन
कुष्टन थिसे सिईव ना सो काया वस्तु सुया या पाप
न थुसा जुया व सिईव को सवस्तु सुया या पापन
व्याय जुईव गुरु निन्दा या ड्वा या पापन ज्ये तजु
या व सिईव कपास सुया या पापन ब्याल नुई से
व्यासद ईव देवता नी डाया ड्वा या पापन तो सन
जुईव हुने सरील गहिल जुईव हुने नया सवाद
मसिसें दुख सिईव तो सन पती निदान या ड्वा या
पापन ब्यापाल मसिसें भाव मसासें सिईव कुति
नी या के नया व प्रसङ्ग या ड्वा व सत नतिया या

पापन असुवि कथिनदासे सिद्धे हने होयावे
सा येर सन्द या दुगया पापन तरकसंचो निव लुवह
सुयाया पापन माह तरकसंचो निव जाकि वा हो
सुयाया पापन सुया सुदे पुते माह लिई न सुया
या पापन ना तु सुयाया पापन तु सुयाया पापन
पुत मुत न वरत सुयाया पापन अन्न मया निव
वाडो २ थाय स वा स मला से जुई व गुरु स्त्रिव
पुसङ्ग याड्या पापन लिङ्ग स प्यापत जुया व का
मत फसे सिंव ह निव पुसङ्ग यात सा विद्या हिन्त
जुई व सजा या स्त्रिव पुसङ्ग यात सा माम व पुसंग
याड्या थें पाप लाक थ व धितिं सहोदर या स्त्रि पुसं
ङ्ग याड्या पापन कुल हिन्त जुया व व नि त्वा च या
स्त्रि पुसङ्ग यात सा गो ह त्या वं ह ह त्या स्त्रि ह त्या वा
त ह त्या थ्वे ते पाप लाक स्वङ्गे ने द दा या स्त्रि पुसङ्ग
यात सा सन्तान म द ई व हो पा डि नी व पुसंग यात
सा स्वात संवे था दयी व नो निवन पां पुसङ्ग यात
त सा ह्मा स ना दयी व सा त्मी नी व न पां पुसङ्ग या
त सा ह्मा कु चु स्य चा सुस्य अति दु ख सि से सिई व
समस्त लोक या स्त्रि व न पां पुसंग यात सा का क चि
कु खार्ड त म फल द व थ्वे ते द व या पापन कुण्डल

नरकसः कल्पहिंसोचो निव अवस्य ध्वने पापलाक
मिसः जयागुफलविईव पुसंगयातसो ध्वत्यपाप
नलपलपिक निश्चयन ध्वने सियावः मनुष्यलो
कन धरलेपे मालः हने भुषि सिमा^स युयायापाप
नः प्याचन भुङ्गवचो निव हने थमं जसकाय
निमिर्तिन द्वायावो द्वायाडवायापापन हसपो
तसकोचन व किव थयी डवितार स्वयाव मनुष्ये
न धर्मकर्मयाग मालः धकः धर्मन तक्षिमयता
कड्गव विज्यातः ॥ ॥ इति श्री धर्मलक्षिमस्वो
देषापकर्मफलकथा सप्तमोऽध्याये ॥ ७ ॥ ॥
धर्म उवाच ॥ अवसे भाविनो भावा भवन्ती महता
मपि नग्नस्त्वे नितकस्थसे महाहिस यन हरि ॥
ध्वसिलोकया अर्थथे अवस्यन मनुष्यपनीसे न
धव भाविनया डगर्थे जुईव तव धा ड जुलसां यु
कु धा ड जुलसां थमं या डगया फलन माहो देव
पोचीन जुयाव जुय माल हने हुवस्तु मदुधका
व श्री कृष्णने जलसयन या डगव विज्यात धव भा
विन थुका जुला ध्वने निमिर्तिन मनुष्यपनिसेन
मालयाव सियके माल थमन या डग कर्मन थव
तां जुईव निश्चयन वृहल्लोक सभक्तलेपे जुलसा

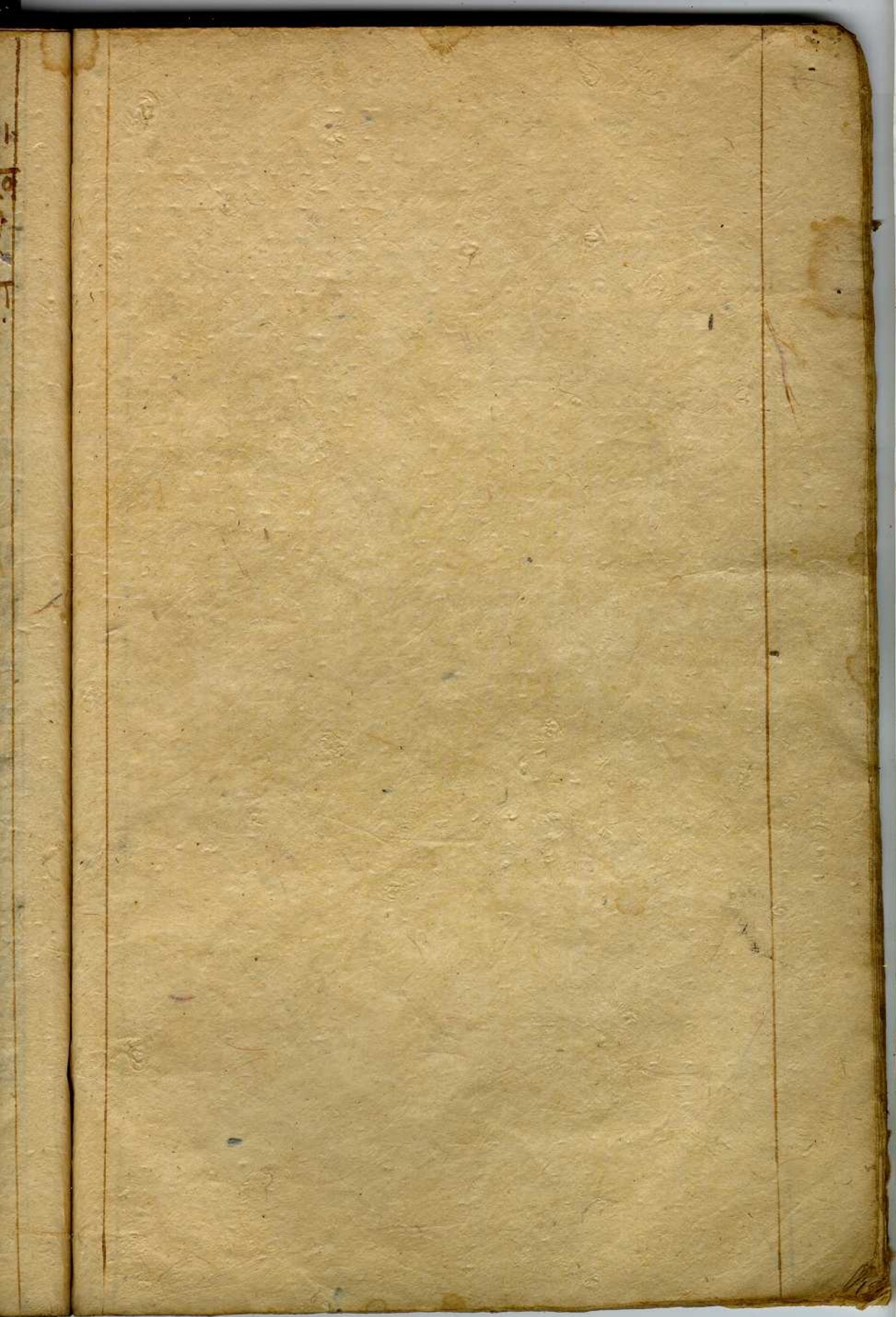
नं थमं याङ्गकर्मनं थवता जुईव विष्णुन दश
अवतारकायाव. क्षरयाव. जुहो थमं याङ्गकर्म
नं थवता जुईव. माहादेव दिगम्बर जुयाव जुला
श्रीसूर्य अंकाश स भुमल पाव जुला. थते सिया
व भनुष्य लोक स्येन. भीरु. २ कर्मसदु विद्या सो
यमाल. गुरु पुत्र जुलोवा. गुरुया के जुलोवा. थ
पनी सके सेवायाय माल. गुरुया आजानेने. दि
हुत कर्मयाय यज्ञयाय गुरु उपगन्त सुने महु
हने तिर्थगमनयाय. स्नानयाय स वस्त्रदानया
यस. पीत उद्धारयाय स. जिलातन ह्याय मोचा
नके माल. सिमहु भाल पाव पुजायाय. विष्णु स्था
पनायाय सूर्य भक्तियाय. वाहनया के सेवाया.
य कुलधर्मयाय. मामववुषा के सेवायाय. ज्याथ
जिथीन के तीके दोतहि मेवन काया फल लोक
जुलो. ब्रह्मा. विष्णु. सूर्य याथे. थमं याङ्गकर्मनं.
थवता जुईव. थतेन. भिङ्ग्यात सामिङ्ग जुईव
मभिङ्ग्यात सामभिङ्ग जुईव हने थव सरिर
थमन निदानयाय माल. मनसा वाङ्मायाय मा
ल. श्रीसम्यतिदक स्ववो थ स्ये. ह्वो भोग भुक्ता
य. ह्वो दान दत्तयाय. ह्वोन कुलधर्मयाय. थ

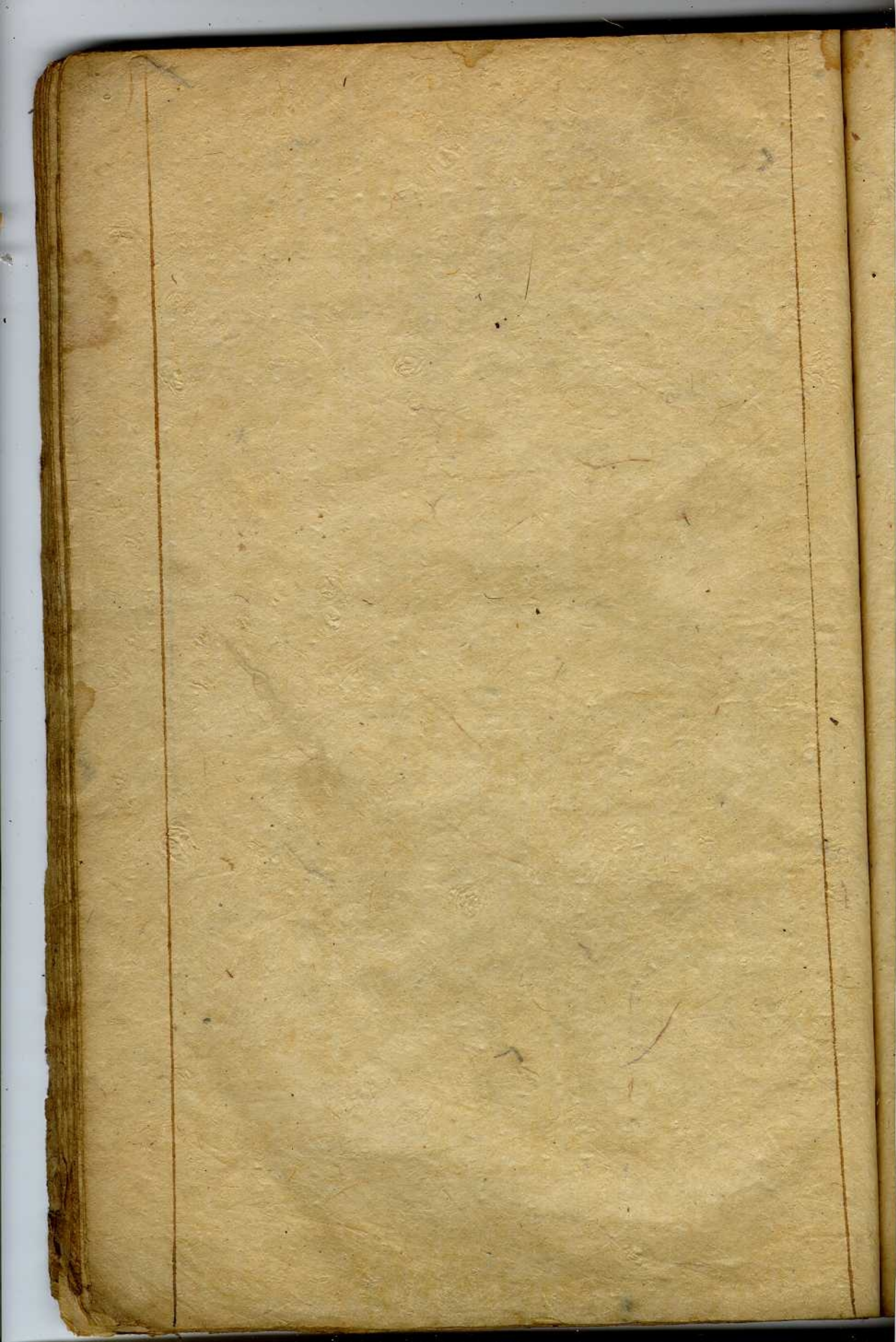
ने कर्मविचारा लयाये कर्मउपाजहुन मनु ध्वते
न मनुष्यलोक न श्रद्धायाथे मीठ कर्मस दुवि
यमात साधु जनव प्रमदु यायमात भक्तज
नयावसा मचो ऽहम ईश्वरपदीमेन सत्यमफु
तकी या कारनने श्वसन्सार रक्षा जुयाची ना
ध्वतेन मनुष्यलोक न वृत्त पाव सोयमात ध
कं धर्मन लक्ष्मियाताक ऽनव विज्याने ॥ ॥

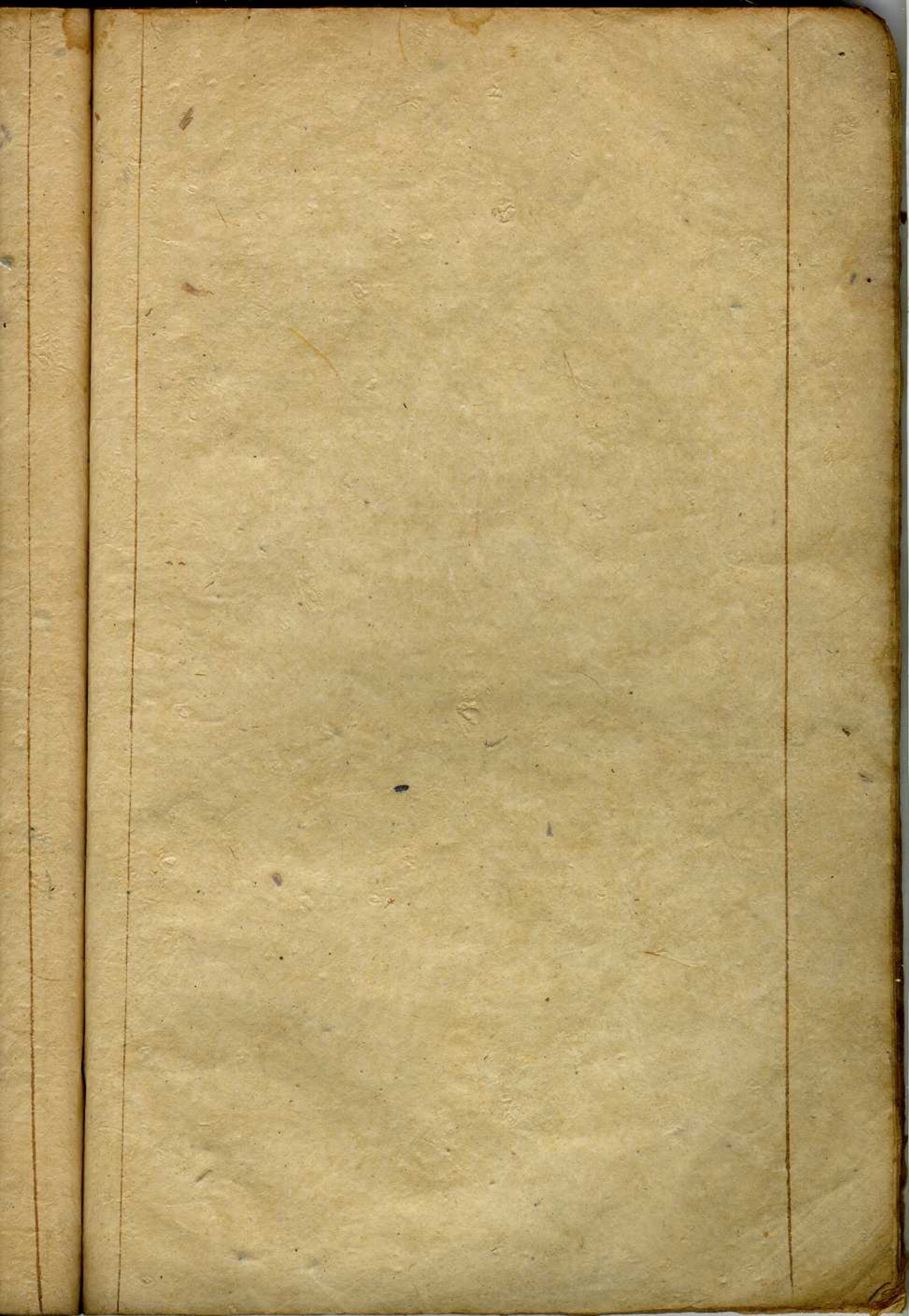
श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसर्वदेवीनमः॥ हिमालि
याकोसंचोनागुराज्ञानविवर्मा॥ यायमफु
जिनमांकरुनानस्ववर्मा॥ १॥ संसारयाभ
ताजुस्यलोक रक्षायावर्मा॥ जन्ममदुधने
मदुगथेयानानयेमां॥ थथिडवल्ममनुवेता
गुनगथेलाईमां॥ संसारयाभताजुसलोक र
क्षायावर्मा॥ २॥ गुनमदुज्ञानमदुसुनारक्षा
याईमां॥ रूपमदुसिर्पमदुसुनाहनाताईमां
॥ संसारयाभताजुस्यलोक रक्षायावर्मा॥
३॥ हिमिमदुसिर्दिमदुसुनाजकययिमां॥
भाभिमदुजन्ममदुगथेयानानयेमां॥ सं
सारयाभताजुस्यलोक रक्षायावर्मा॥ ४॥
ईष्टमदुमित्रमदुसुनारक्षायायीमां॥ थ
वथितिदकोमेनंजिताडगलेमहामां॥ संसा
रयाभताजुसलोक रक्षायावर्मा॥ ५॥ थव
कमाईमदतनावमांमववुन्वातमां॥ नकेलि
कमफयावकायंलोचवातमां॥ संसारया
भताजुस्यलोक रक्षायावर्मा॥ ६॥ दाजुकिजा
सकसेनंहातुहानातलमां॥ तताकेहेजिता
जनंजितडगलेमहामां॥ संसारयाभताजुस

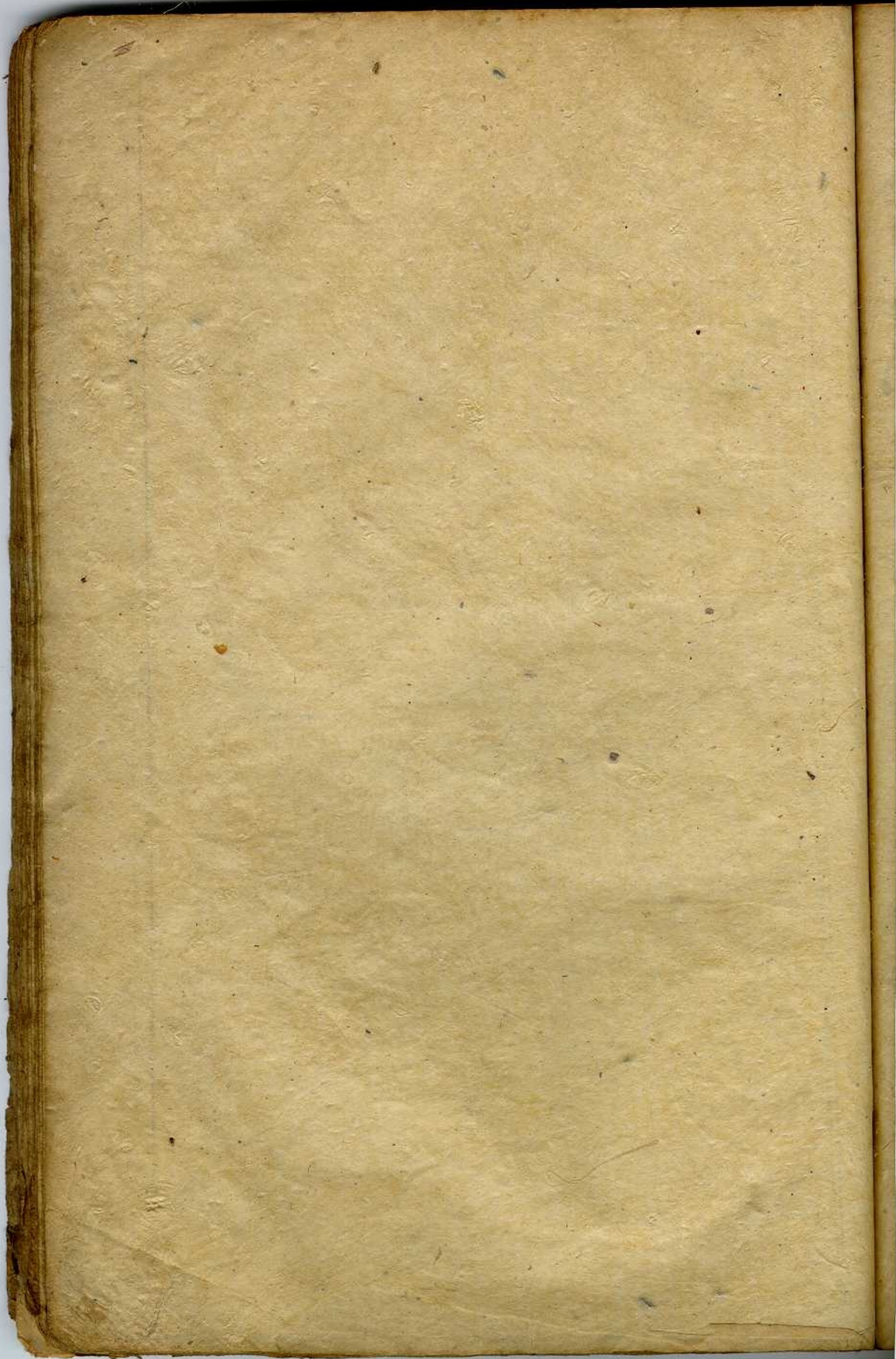
लोकरक्षायावमं॥७॥ सकसेन उल्लेख्ये
का धनजन विवमं॥८॥ ग्यानं मदुध्यानं मदुग
तिगथे लायमं॥ संसारया माता जुसे लोकर
क्षायावमं॥९॥ धर्मं मभिया नागुली भिड सु
नां यायुमं॥ भीडया सां मभिया सां धर्म
याको जुयीमं॥ संसारया माता जुसे लोकरक्षा
यावमं॥१०॥ स्वर्गवने पातावने संगदोषव
निमं॥ थुगुलिया करण भिड संगविवमं
॥ संसारया माता जुसे लोकरक्षायावमं॥११॥
निरंजन अतिदुखि ह्वाकसया जुलमं॥ जिन
मन बोया गुलि पुरेया ना विवमं॥ संसारया
॥१२॥ धनजन सुखभोग वियते तथ निमं
॥ हाहा कालं योया बोना ता काल दत मा॥ सं
सारया॥१३॥ जिथि डोल अवलाया विनति
नेरुनेमं॥ नेगु गुं याद थुसं मधु न ताडग मि
तिमं॥ संसारया॥१४॥ कलपक्ष फालु नित्री
योदशि मिनिमं॥ गुरुवार सत भीया साधे जो
ग जुलमं॥ संसारया माता जुसे लोकरक्षायाव
मं॥१५॥ द्विती शारदा देवि स्त्रोत्र समाप्तं॥॥

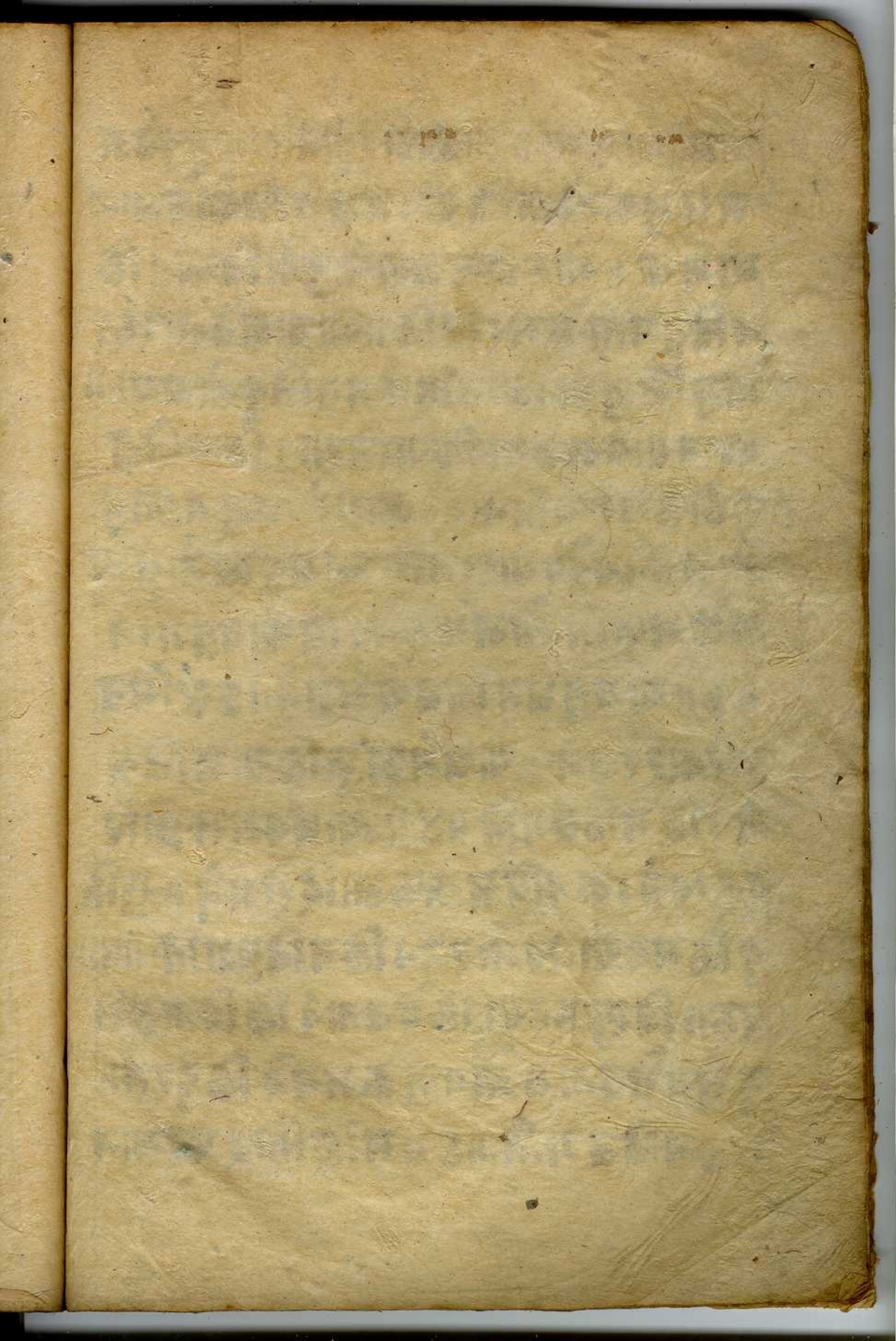
श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री सारदा देवी नमः ॥ ॥
क का कि की कृष्णया पुय अति सरस्वति ॥ र
खा खिखी खायू स्तुतु वया जि पु विनति ॥ हे
मां मं सरस्वति विं व जिता सुविशा ॥ १ ॥ ग गा
गि गी गाम दु देवनां धनं म दु ॥









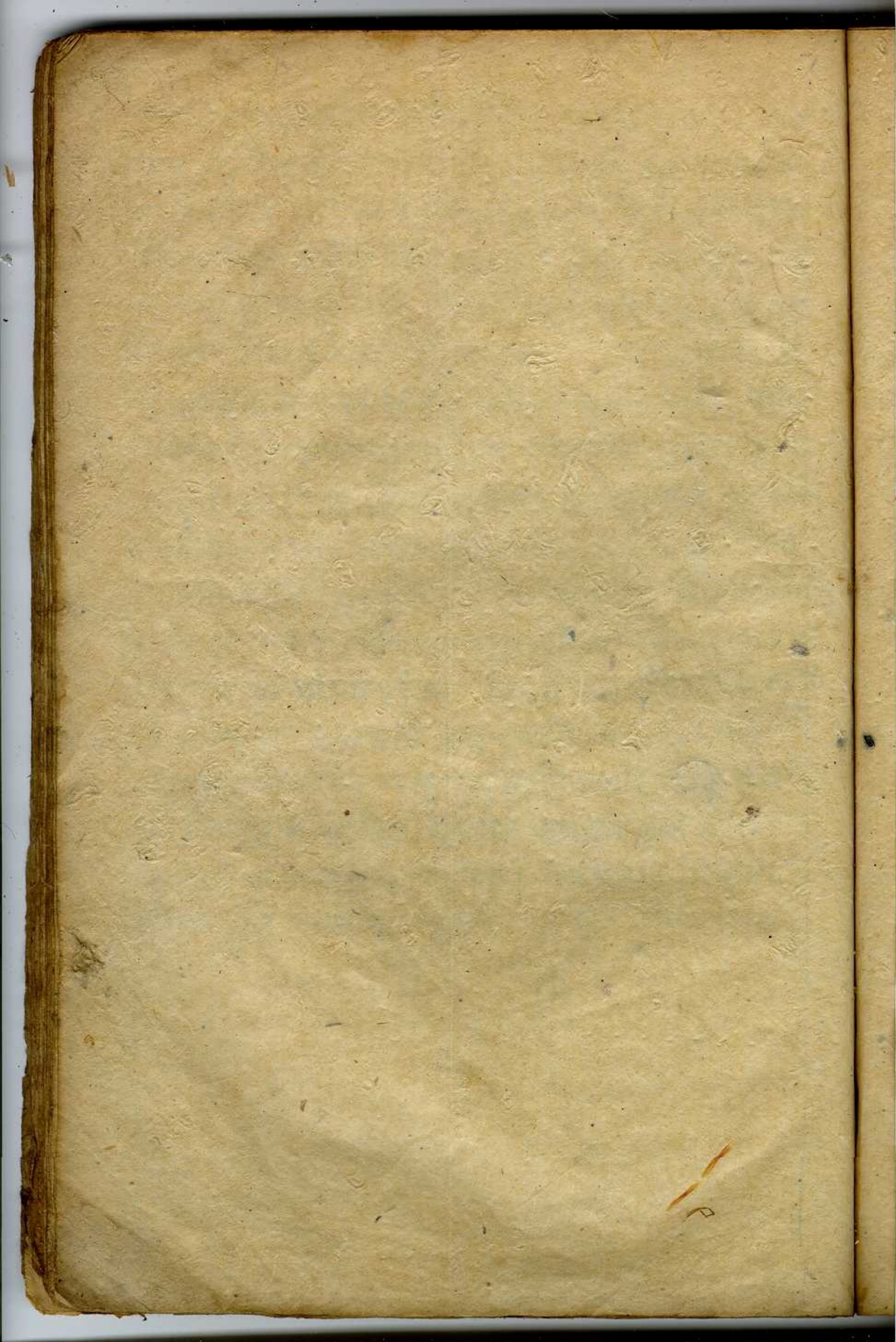


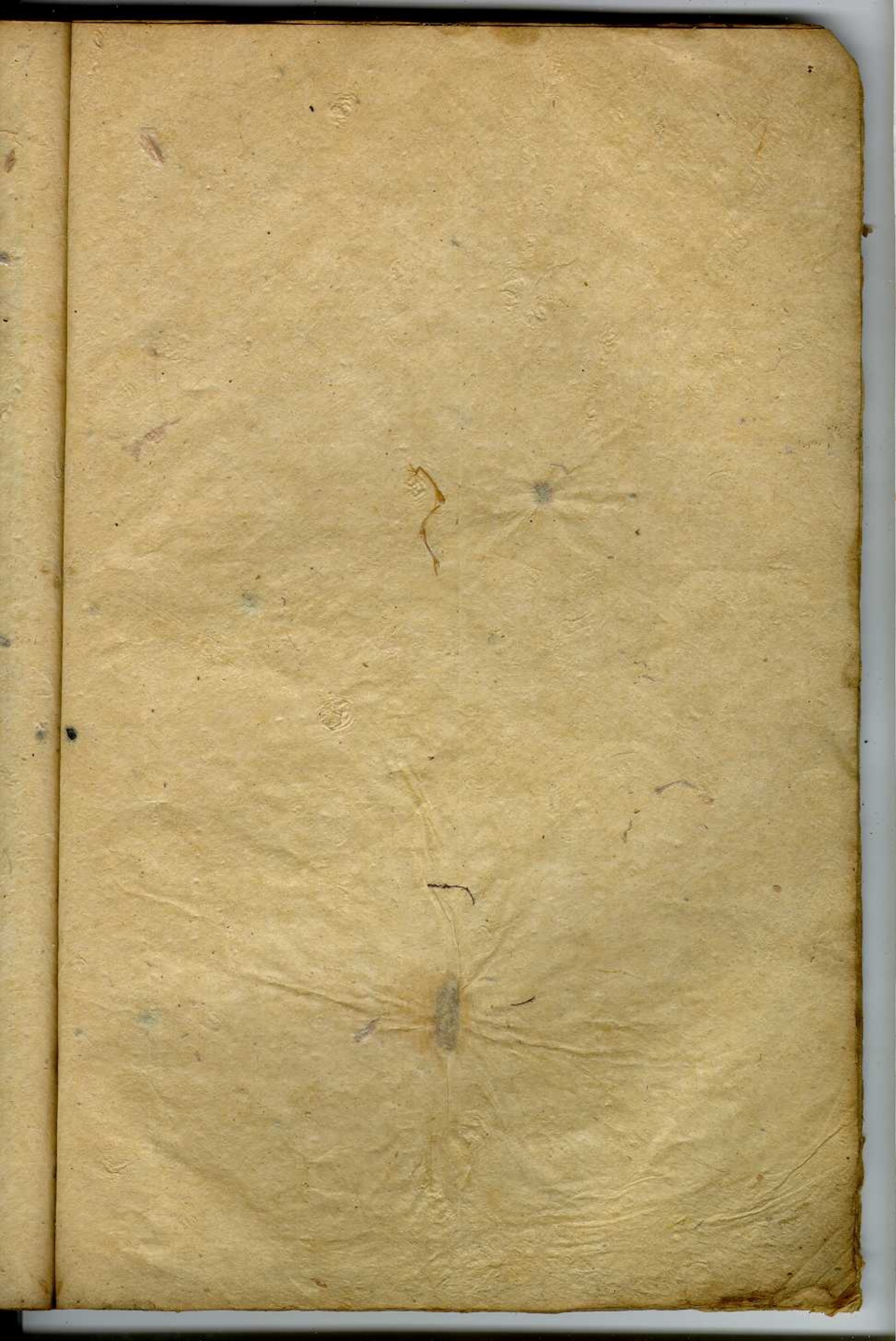
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशारदादेवी नमः ॥ ॥ पुर्व ज
न्मसं सुकर्म तोफिया ॥ गर्भसं जितो नेमाल
सा भया ॥ मोह जाल जल संलुके विया ॥ हि
न विव गती हे सरस्वति ॥ १ ॥ बाल बेल सं
त्य गुलि जुया ॥ ज्ञान हिन मन जिकु संगया ॥
ध्यान घाय मफया हिपालिया ॥ हिन विव
गति हे सरस्वति ॥ २ ॥ काथने जितु लङ्का व
जो भने ॥ वश्य या डतल लाम दू लने ॥ भा
लये मफु जि लोभ मोहन ॥ हिन विव गति
॥ ३ ॥ या यतु धन जि दर्य अर्जन ॥ ईश मित्र
परिवार रंजन ॥ या यने मफु हिना म चित्र
न ॥ हिन विव गति ॥ ४ ॥ ज्या धं बेल सं जारि
रदुखन ॥ वात पित्र कफ आदि रोगन ॥ सुधि
वुद्धि मदया स्वभाव न ॥ हिन विव गति ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु हरया हि देवता ॥ हि विनान म
दु सुन मेवता ॥ जोग जुक्त मनने हि दुरता
॥ हिन विव गति ॥ ६ ॥ सहि शिद परमान

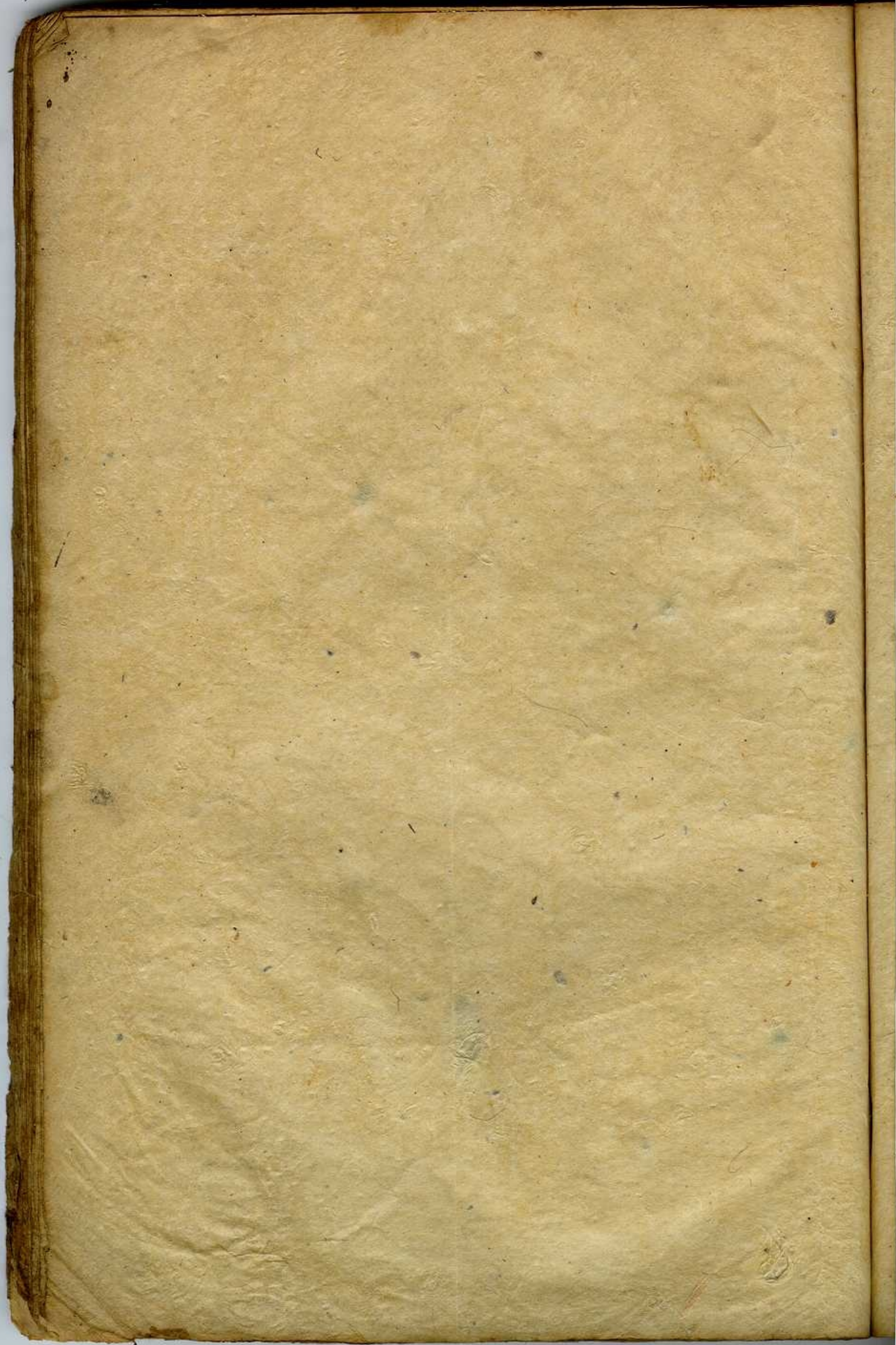
आयुष्या । जोति संभ्रयातला मनु स्याया ॥
अर्द्धभाग फुतयो चोहेनुया । छिन विव गति
॥ २ ॥ स्ये सवर्ष स्वंगु भावनं वनं । काल वल
जमराज दूतनं ॥ धर्म याय मफुतो जिनं छु
नं । छिन विव गति ॥ ८ ॥ गो लनं न्द याई छि
रुपा सना । वयाता छु जमराज सासना ॥ वा
निदा सया मति छि चिन्नना । छिन विव गति
हेसर स्वति ॥ ९ ॥ इती सरस्वती स्त्रोत्रं ॥ ॥

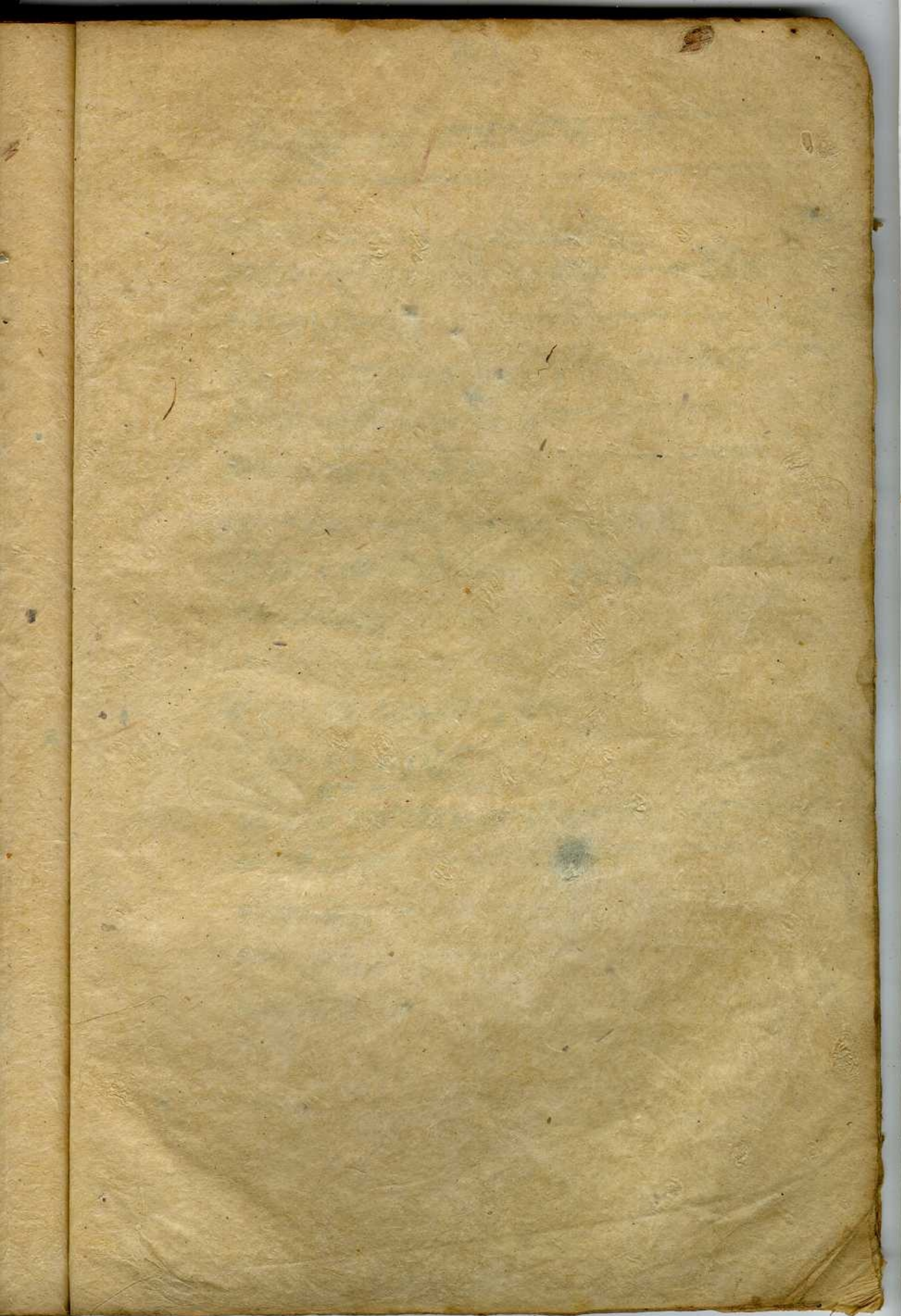
रागनिर्गुणभजन ॥ ॥ शिवतागडव नित्यारति ॥ ॥ जय
गंगाधर शिव हर गिरिजाधीश ॥ त्वं मां पालय नित्यं कृप
या जगदीश ॥ हर हर हर महादेव ॥ ॥ ॥ कैलासे गिरि शि
खरे कल्पद्रुम विपिने शिव कल्पद्रुम विपिने ॥ गुञ्जति मधु
करपुञ्ज कुञ्जवने गहने ॥ कोकिल कूजित खलित हंसा सम
ललिता ॥ शिव हंसा समललिता रचयति कला कलापि नृत्य
दि मुद सहिता ॥ हर हर हर महादेव ॥ गंगाधर ॥ १ ॥ तस्मि
न्मुललितदेशे शाला मगिरचिता ॥ शिव शाला मगिरचिता
॥ तन्मध्ये हरिनिकट ॥ गौरि मुद सहित कीडारचयति भूषरञ्जि
तमतिमिसं ॥ शिव रञ्जित मतिमिसं ॥ इन्द्रादिक सुर सेवित
प्रणयति तेतीसे ॥ हर ॥ गंगा ॥ २ ॥ विबुध बहू विधु नृत्यति
हृदये मुद सहिता ॥ शिव हृदय मुद सहिता ॥ किन्नर गानं कु
रुते सप्त स्वर सहिता ॥ धिननं धिननं कथयति मृदङ्ग वाद्य
रते ॥ शिव मृदङ्ग वाद्यरते कुन्नु रललित वेनुमधुर नादयते
॥ हर हर ॥ गंगा ॥ ३ ॥ रुणु रुणु चरणे वाचति त्रिपुरे सुज्वलि
ता ॥ शिव सुर सुञ्जलिता ॥ चक्रावर्त भ्रमयति कुन्ते तां तां तां ॥
शिव कुन्ते तां तां तां ॥ तां तां लुपचुप चालं वादति शिव तालं ॥
त्र्यं गुष्ठाङ्गुलि मादलस्यगतं कुरुते ॥ हर हर ॥ गंगा ॥ ४ ॥

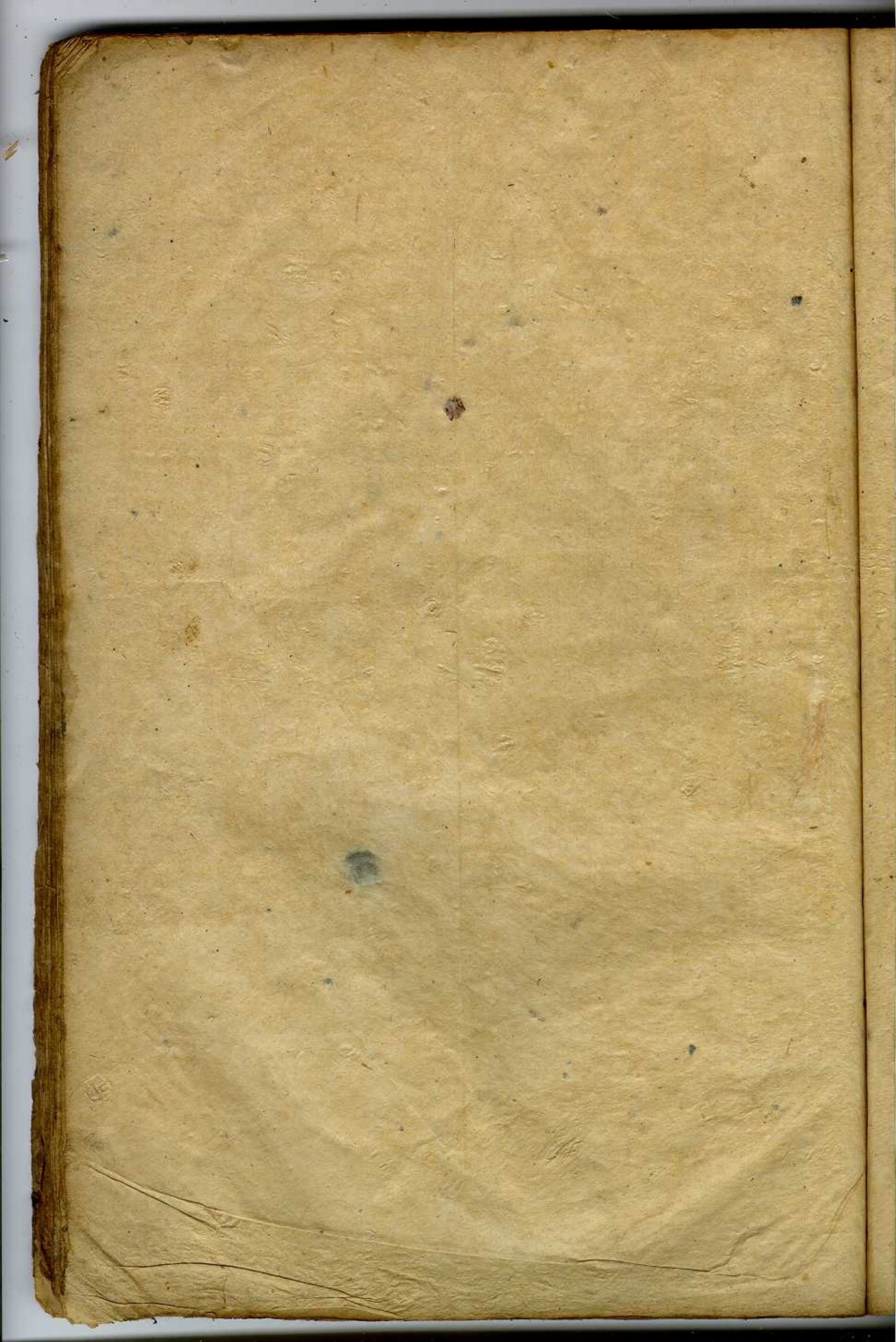
मय
म
श
शु
म
य
म
म
जि
न
कु
श
ते
ले
॥
॥





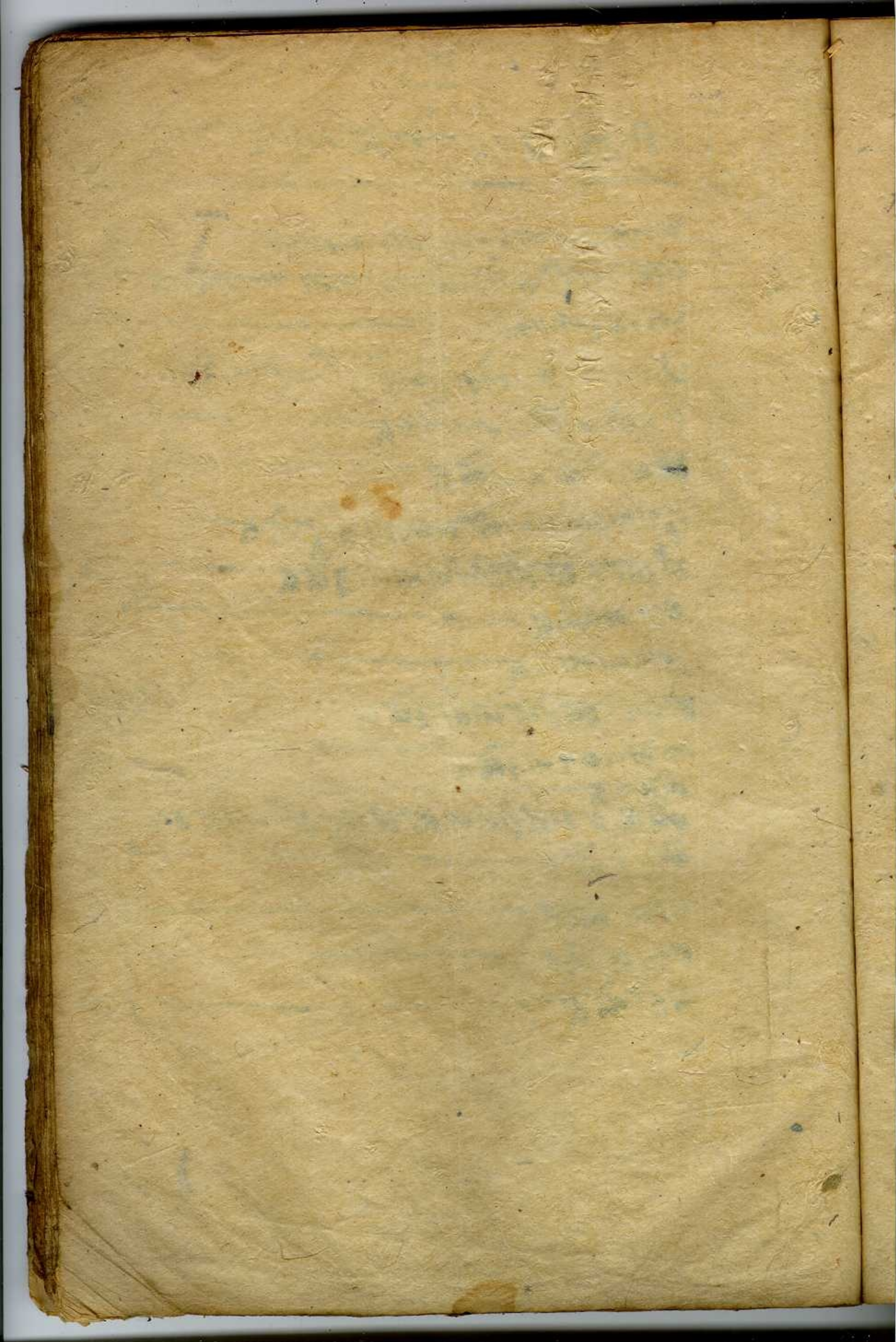


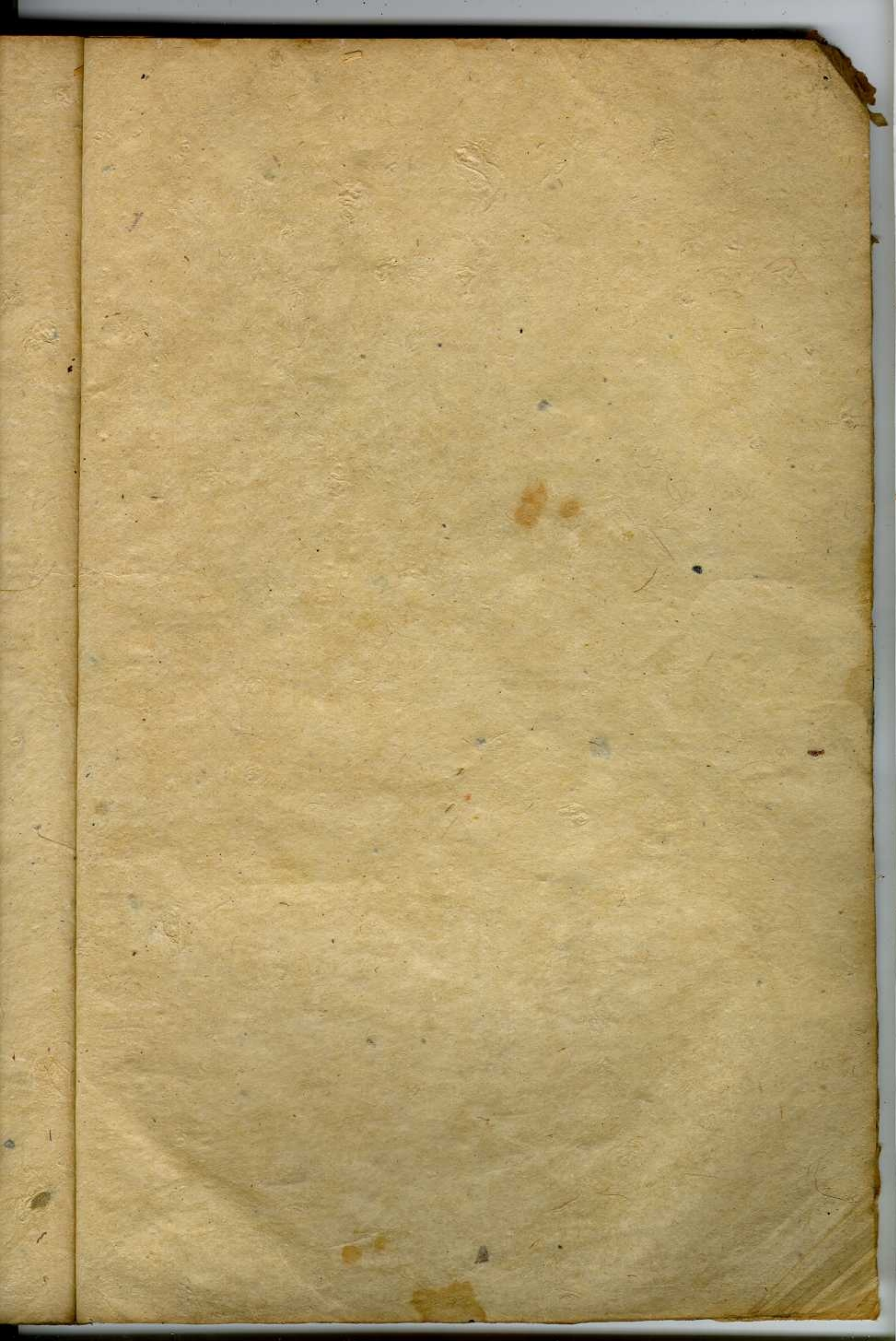


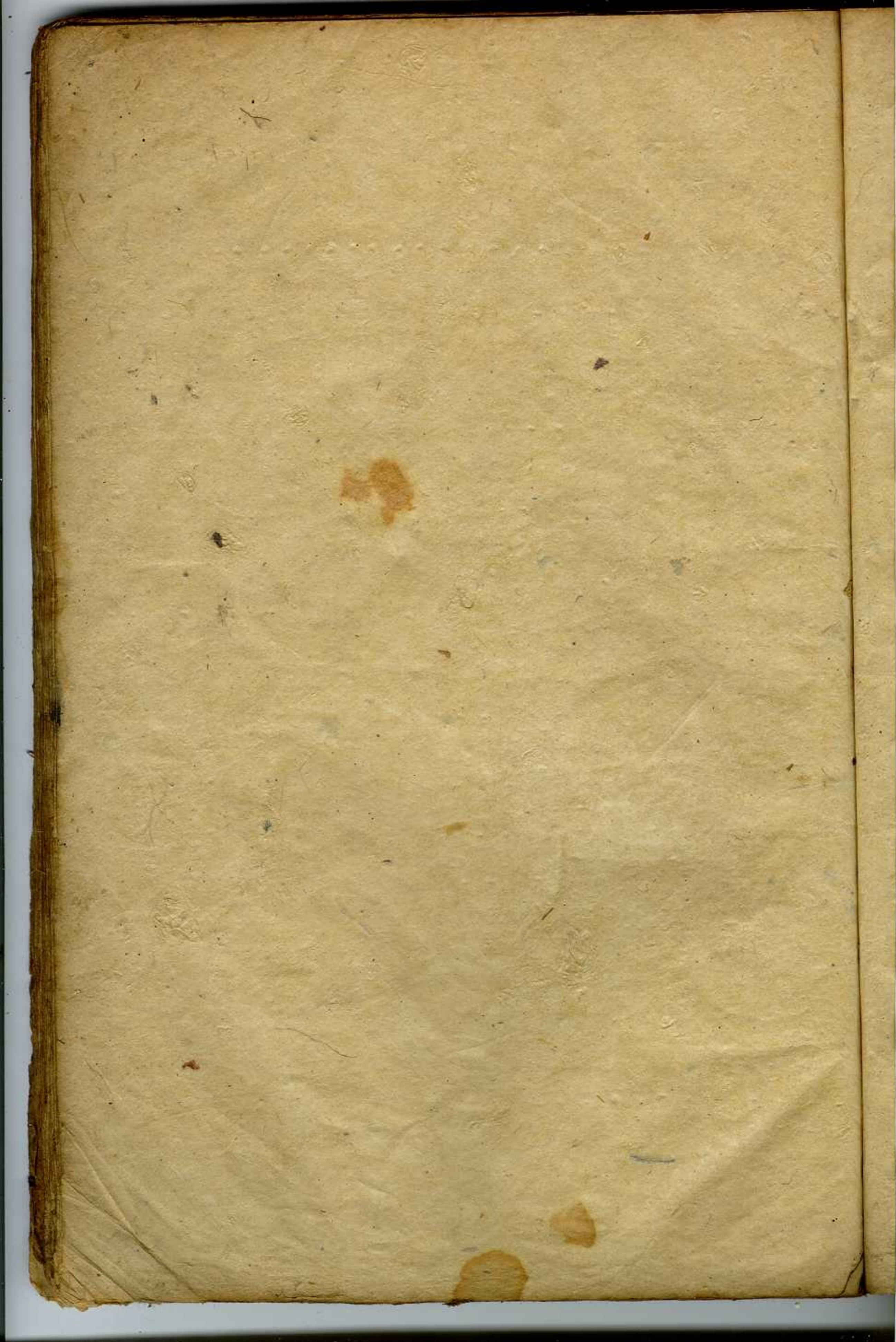


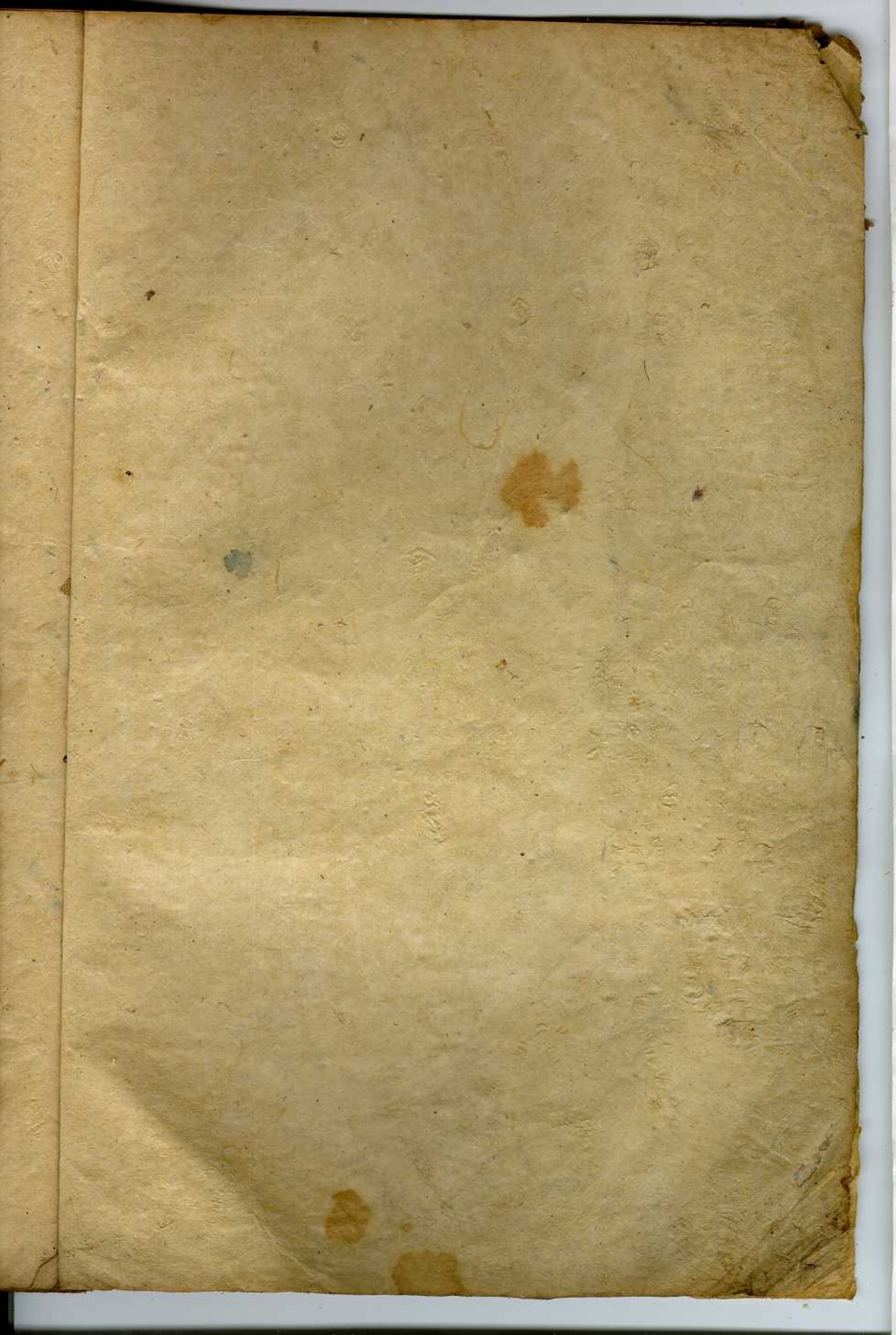
श्री गणेशाय नमः के गये को फास

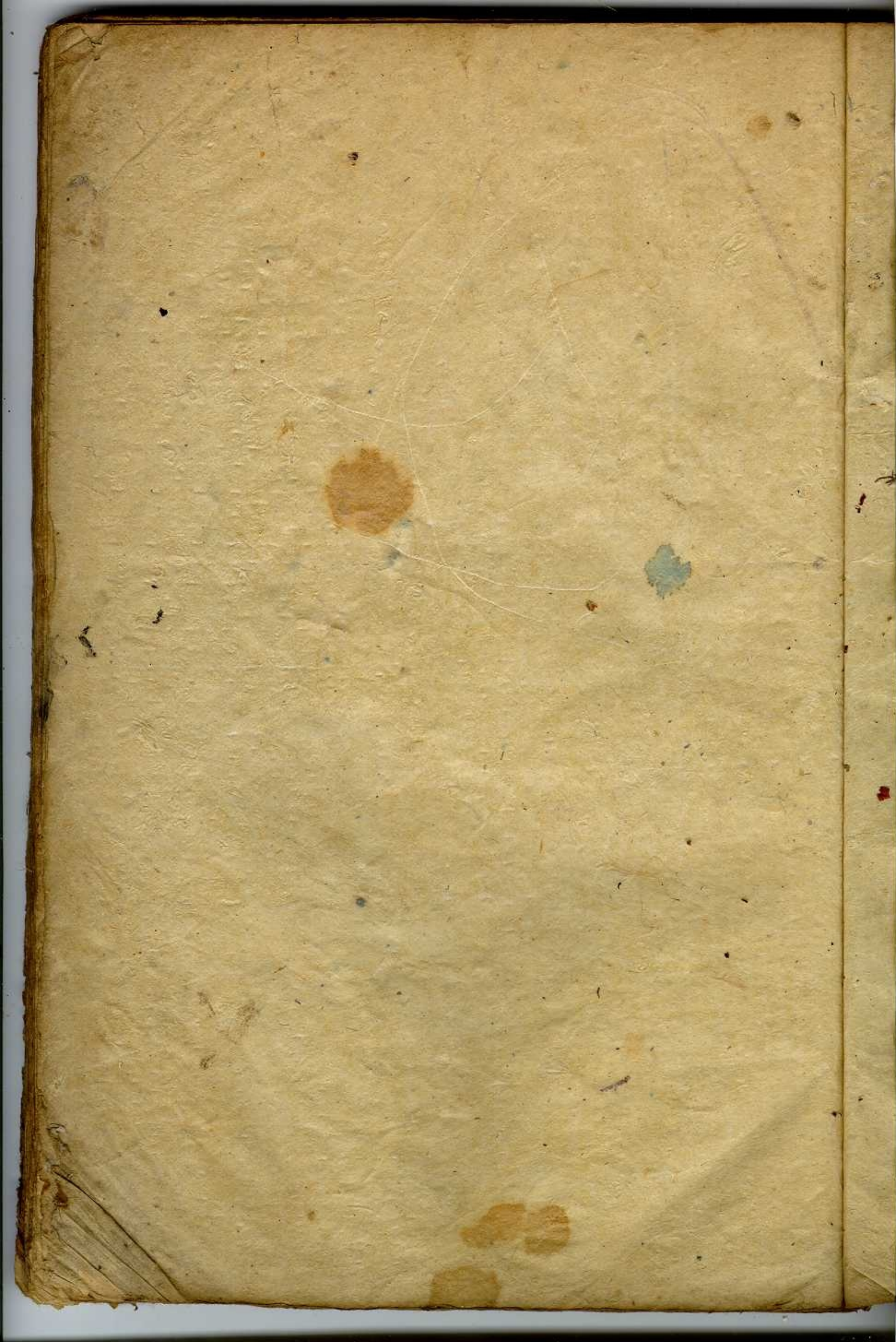
मकपुत्र ३१५ मा धन ५५ (तीन किमो ६५)	२१५०
सख (गरी) के गये को तेल माना	२६६
५५५५ (तीन किमो)	२१५५
५५५५ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना ३६६	१२२
६६६६ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १५०	१५०
७७७७ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १५५	१५५
८८८८ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १२६	१२६
९९९९ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना ११	११
१००० मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना ११२	११२
११११ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १२६	१२६
१२१२ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना ११७	११७
१३१३ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना ११	११
१४१४ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १५०	१५०
१५१५ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १४०	१४०
१६१६ मा मा पु (तीन किमो) गये को तेल माना १३०	१३०

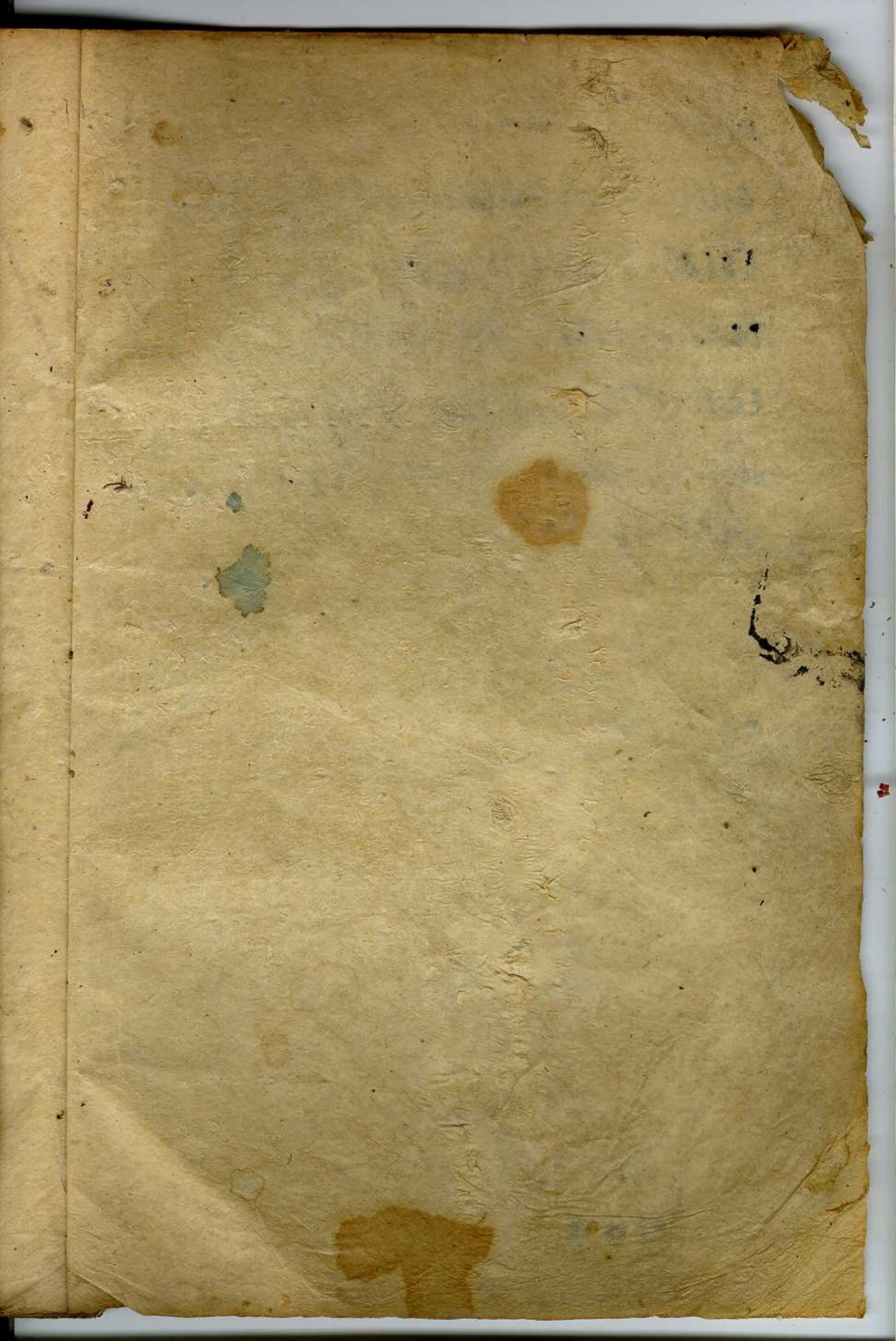












एगनीगुन भजत ॥ ॥ जै जै जै शिव शक्ति
मानु भवानी जगत जननि दुरव दारिद्र्य करि
शिव गु जेश्वर ॥ जै ॥ ॥ ध्रु ॥ परवत उपर
दिव्य मन्दिर गंगा नगहे । जहा विराजित
स्यामसुं दर २ परमेश्वर ॥ जै ॥ ॥ वा ॥ सुर
नर मुनि चरन स्पन्द मन्दिर ॥ गंगा नगहे
जहां विराजित